समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• फरवरी २०२१ • वर्ष ७२ • अंक ०२

मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

२६ जनवरी २०२१ : शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता स्थित सम्मेलन के केन्द्रीय कार्यालय भवन डकबैक हाउस के समक्ष झण्डोत्तोलन करते राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री भानीराम सुरेका। साथ में परिलक्षित हैं सर्वश्री संतोष सराफ, संजय हरलालका, आत्माराम सोंथलिया, नंदलाल सिंघानिया, गोपाल अग्रवाल, सुदेश अग्रवाल, बसंत मित्तल, दामोदर बिदावतका, नंदकिशोर अग्रवाल तथा अन्य केन्द्रीय-प्रांतीय पदाधिकारी व सदस्यगण।

इस अंक में –

- अध्यक्षीयः ऋतुराज बसंत का स्वागत
- सम्पादकीयः धन घटा गरजत घनघोरा
- रपटः सम्मेलन का गणतंत्र दिवस समारोह
- आलेखः सीताराम शर्मा
  बंगाल में हिंदीभाषियों की राजनीतिक हैसियत
- भाषाई आलेख : संजय हरलालका
  बीकानेरियां मांय जीवती है आपरी भासा अर संस्कृति

DOLLAR MAN | BIGBOSS

FIT HAI BOSS

Also available with
VIRUS KILL LAYER

| www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

COMPLETE ELECTRICAL SOLUTION
ELECTRICAL WIRES
FANS AND LIGHTS
LT PANEL, CABLE TRAY AND TRANSFORMER
WE MANUFACTURE
POWER TRANSFORMER
DISTRIBUTION TRANSFORMER
LT ELECTRICAL PANEL
PERFORATED CABLE TRAY
LADDER-TYPE CABLE TRAY
GARODIA ENTERPRISES
AARNAV POWERTECH
MARKET ROAD EAST, UPPER BAZAR
RANCHI - 834 001, JHARKHAND
www.aarnavpowertech.com
garodia@garodiagroup.com
0651-2205996

KOX HOSIERY PVT. LTD.

Registered Office: 1/4D, Khagendra Chatterjee Road, Kolkata - 700 002
Corporate Office: 1202B, PS Srijan Corporate Park, GP Block, Sector V, Saltlake City, Kolkata - 700 091
Visit us : www.koxgroup.com, E-mail : info@koxgroup.com, Customer Care No.: 033-4006 4747

समाज विकास

◆ फरवरी २०२१ ◆ वर्ष ७२ ◆ अंक ०२
◆ एक प्रति - ₹१० ◆ वार्षिक - ₹१००

अनुक्रमणिका

शीर्षक — पृष्ठ संख्या

- **सम्पादकीय : शिव कुमार लोहिया** ७
  धन घटा गरजत घनघोरा
- **अध्यक्षीय : गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** ९
  ऋतुराज बसंत का स्वागत
- **आलेख : संजय हरलालका** १०
  बीकानेरियां मांय जीवती है आपरी भासा अर संस्कृति
- **रपट –**
  सम्मेलन का गणतंत्र दिवस समारोह १२-१३
- **प्रांतीय समाचार** १४
- **आलेख : सीताराम शर्मा** १५-१६
  बंगाल में हिन्दीभाषियों की राजनीतिक हैसियत
- **आलेख : अतुल कनक** १९-२०
  एक भाषा की विकास यात्रा
- देव-स्तुति २६
- सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत २७-२८

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
All India Marwari Federation

प्रशासनिक एवं सम्पर्क कार्यालय : **४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता - ७०००१७**
फोन : ०३३-४००४ ४०८९
पंजीकृत कार्यालय : १५२बी (द्वितीय तल), महात्मा गांधी रोड कोलकाता - ७००००७

◆ email: aimf1935@gmail.com
◆ Website : www.marwarisammelan.com

स्वत्वाधिकारी ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन के लिये **श्री भानीराम सुरेका** द्वारा ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन, ४बी, डकबैक हाउस (४ तल्ला), कोलकाता-१७ से प्रकाशित तथा सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित।

◆ प्रेरक संपादक : सीताराम शर्मा ◆ सम्पादक : शिव कुमार लोहिया

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
4बी, डकबैक हाउस (चौथा तल्ला)
41, शेक्सपियर सारणी, कोलकाता-700 017

समाज से सादर निवेदन

वैवाहिक अवसर पर मद्यपान करना - कराना धार्मिक एवं सामाजिक दोनों रूप से उचित नहीं है।

प्री-वेडिंग शूट हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के खिलाफ है।

समाजहित में इनसे परहेज करें।

निमंत्रण में ई-कार्ड को बढ़ावा दें।

बधाई!

कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष डॉ. सुभाष अग्रवाल को गत २५ जनवरी २०२१ को फेडरेशन ऑफ कर्नाटक चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री (एफकेसीसीआई) की कार्यकारिणी में विशेष आमंत्रित सदस्य मनोनीत किया गया है। एककेसीसीआई अध्यक्ष श्री पेरीकल सुंदर ने डॉ. अग्रवाल को मनोनयन पत्र सौंपा। इससे पहले भी डॉ. अग्रवाल एफकेसीसीआई के कार्यकारिणी सदस्य तथा कई समितियों के चेयरमैन रह चुके हैं।

डॉ. सुभाष अग्रवाल सम्मेलन के विशिष्ट संरक्षक सदस्य हैं एवं इनके नेतृत्व में कर्नाटक सम्मेलन सक्रियतापूर्वक कार्यरत है। **अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन हार्दिक बधाईयों के साथ डॉ. सुभाष अग्रवाल के सुदीर्थ स्वस्थ, सम्पन्न एवं सक्रिय जीवन की मंगलकामना करता है!**

HAPPINESS COMES IN MANY COLOURS. FIND YOURS IN THE Happy Rainbow Box.

Kanoria Foundation
WORK WITH DEVOTION

Srei, since three decades, has been in the business of financing infrastructure, developing projects and empowering entrepreneurs. Our Happy Rainbow Box is a collection of such happy and optimistic thoughts that have the potential to change the world for the better.

Infrastructure Project & Equipment Finance | Medical, IT, Agriculture & Mining Equipment Finance | Infrastructure Project Advisory, Development & Investments | Investment Banking | Insurance Broking

Log on to www.happyrainbowbox.com and #SpreadTheHappy

L&K | SAATCHI & SAATCHI

धन घटा गरजत घनघोरा

हमारे प्राचीन सामाजिक वर्ण व्यवस्था में सामाजिक कार्यों को मुख्यतया चार भागों में बाँटा गया था। तप, अध्ययन द्वारा ज्ञान अर्जित करके समाज का मार्गदर्शन करने वाले वर्ग को ब्राह्मण के नाम से जाना गया। दूसरा समाज की सुरक्षा समान रूप से महत्वपूर्ण कार्य माना गया। इस कार्य को अंजाम देने वाले वर्ग को क्षत्रिय कहा गया। तीसरे व्यवसाय, अध्यावसाय एवं अन्यान्य नैतिक विधियों द्वारा धनोपार्जन करके सभी वर्गों की आवश्यकताओं का ध्यान रखने के लिए एक वर्ग निर्धारित किया गया, जिसे वैश्य के नाम से जाना गया। चौथे वर्ग को शूद्र की संज्ञा दी गई। इस वर्ग का कार्य निर्धारित किया गया – तीनो वर्गों की सेवा में संलग्न रहने का। इन वर्गो का अपना-अपना महत्व था एवं किसी के छोटा-बड़ा होने का कोई सवाल नहीं था। सभी वर्ग मिलकर एक-दूसरे के पूरक के रूप में समझे गए। उदाहरण के रूप में हम उल्लेख कर सकते हैं कि केवट के सभी शर्तों को स्वीकार करने के बाद ही भगवान राम उसके नौका में बैठ पाये।

कहने का तात्पर्य यह है कि समाज व्यवस्था में धनोपार्जन का महत्वपूर्ण स्थान माना गया है। इसका उद्देश्य था– समाज व्यवस्था में शामिल सभी वर्गों का मंगल। जीवन में धन का प्रयोग सीमित था किन्तु संतोष के कारण असीमित प्रसन्नता का प्रदाता था। कबीरदास जी ने इस भावना को शब्दों में सुंदर रूप से व्यक्त किया है –

साई इतना दीजिए, जामे कुटुम्ब समाय
मैं भी भूखा न रहूँ, अतिथि न भूखा जाय।

इतना ही नहीं हमारे मनीषियों ने धन उपार्जन करने के लिए विशेष आश्रम भी निर्धारित किया –

प्रथमेनार्जिता विद्या द्वितीयेनार्जित धनं
तृतीये नार्जितः कीर्तिःचतुर्थे कि करष्योति।

ब्रह्मचर्य में ज्ञान, गृहस्थाश्रम में धन एवं वानप्रस्थ में कीर्ति अर्जन करने से सन्यास सफल हो सकता है।

तात्पर्य यह है कि धन का अर्जन एवं जीवन में प्रयोग के कारण का सुंदर निरूपण किया गया था।

शनैः शनैः समाज की मानसिकता में परिवर्तन आता गया। वर्तमान में समाज व्यवस्था अर्थप्रधान हो गया है। बिना अर्थ सब व्यर्थ, सर्वत्र चरितार्थ हो रही है। टका (रुपया) के महत्ता पर व्यंगात्मक मान को समेटे यह पद बिल्कुल सही चित्रण करता है –

टका धर्म, टका कर्म, टका हि परम तप
यस्य गेहे टकानास्ति, हाँ टके टकटकायते

अर्थात टका धर्म, टका कर्म, टका ही परम पद है। जिसके गृह में टका का अमान है वह हाय टका, हाय टका सोचता हुआ टके की ओर टकटकी लगाये रहता है।

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि धन का अपना महत्व है। साथ-साथ यह सोच भी है कि एक सीमा के पश्चात धन के महत्व में क्रमशः ह्रास होता जाता है। धन के अलावा अनेकों अन्य उपादान हैं जिनका महत्व धन से कम नहीं है। वस्तुतः धन सम्पत्ति के अलावा अर्थ के अनेको व्याख्या हैं – अभिप्राय, भाव, तात्पर्य, प्रयोजन, इन्द्रियों के विषय। यहाँ तक कि जीवन में महत्वपूर्ण एवं अत्यावश्यक उपादान हैं जिन्हें धन से नहीं खरीदा जा सकता। इनमें हवा, पानी, धैर्य, साहस, प्रेम, करुणा आदि आते हैं।

पिछली शताब्दी में हमारा सोच था रुपया पैसा हाथ का मैल है। आज स्थिति है – **बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया।** येन केन प्रकारेन, छल-बल-कौशल से दूसरों की कीमत पर धन कमाने एवं उसके प्रदर्शन की होड़ लगी है। धन की तृष्णा, धन की लालसा अंतहीन है। इस प्यास को किसी भी प्रकार से तृप्त करना संभव नहीं है। कबीरदास के शब्दों में –

जब मन लागा लोभ से, गया विषय में मोह
कहे कबीर विचारि के, केहि प्रकार धन होय

जब लोगों का मन लोभी हो जाता है, तो उसका मन विषय भोग में रत हो जाता है और वह सब भूल जाता है एवं इसी चिंता में लगा रहता है कि किस प्रकार धन प्राप्त हो।

ऋग्वेद कहता है –

मोधमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्य ब्रवीमि वध इत स तस्य
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादि।

अर्थात मैं सत्य कहता हूँ कि स्वार्थ के लिए अन्न संग्रह (धन संग्रह) मनुष्य के लिए कठिनाई (विपत्ति) का कारण होता है।

आज के युग में पैसा ही वह भाषा बोलता है जो पूरी दुनिया समझती है। कहावत भी है – **रूपलाल जी गुरु, बाकी सब चेला।** यानि रुपया सबका गुरु है, बाकी सब चेले हैं।

हमारे मनीषियों ने स्पष्ट रूप से कहा है – न वित्रेन तर्यकीनों मनुष्य। यानि किसी मनुष्य को धन से तृप्त या संतुष्ट नहीं किया जा सकता।

इतने ज्ञान रहने के बावजूद कुछ अपवाद को छोड़कर – पूरी दुनिया धन के पीछे भाग रहा है। एक अंधी दौड़ एवं होड़ में सभी शामिल हैं। साधन एवं साध्य का अंतर भी अब मिट चुका है। धन

के महत्व के फलस्वरूप समाज में धनी व्यक्तियों का वर्चस्व है।

स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान सर्वत्र पूज्यते वाली बात अब धूमिल होती जा रही है। घर में जिस भाई के पास अधिक धन है, वह ही घर का मुखिया है। कहावत भी सर्वमान्य है – **माया तेरो तीन नाम; परस्यो, परसो, परसराम**। धन बढ़ने के साथ-साथ व्यक्ति का समाज में कद बढ़ने लगता है। धन कमाकर पुत्र भी वृद्ध माता-पिता को निकम्मा बताकर खुलेआम उनकी अपेक्षा करते हैं। सर्वाधिक दुःख का विषय तो यह है कि जीवन जीने के जो नैतिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत आधार एवं उसूल है, उनको ताक पर रख दिया जाता है। विदुर नीति के अनुसार, लक्ष्मी उपार्जन के लिए जिन सात गुणों को आवश्यक बताया गया है, आज के माहौल में उनमें से कितनो को हम अपना पाते हैं, दिल पर हाथ रखकर सोचने की जरूरत है –

धृति शमो दमः शौचकारुण्य वाग निष्ठूरा
मित्राणां चानमिद्रोह सप्तैताः समधिः श्रियः।

धैर्य, मनोनिग्रह, इन्द्रिय संयम, पवित्रता, दया, कोमल वाणी, मित्र से द्रोह न करना – ये सात बातें लक्ष्मी को बढ़ाती है।

वस्तुतः धन साधन है। हम इसे साध्य बना रहे हैं। धन का महत्व इस बात पर निर्भर करता है कि इसका उपयोग हम किस प्रकार करते हैं। यह एक चाकू की तरह है जिसके प्रयोग का फल इस बात पर निर्भर करता है कि यह किसी शल्य चिकित्सक के हाथ में है या किसी हत्यारे के हाथ में। आज साधनों के प्रति आसक्ति बढ़ रही है। भोग विलास, इन्द्रिय सुख की वासनाओं मे फँसकर मानवीय मर्यादाएँ, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की तिलांजलि दी जा रही है। जो व्यक्ति, किसी भी प्रकार से हो, धन उपार्जन करने में सफल हो जाता है, वह शेर की खाल ओढ़कर स्वयं को जंगल का राजा घोषित कर देता है। कहा भी गया है –

कनक-कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय
वो खाये वौराए जग, वो पाये वौराये।

धन (सोना) को मादक द्रव्य के समकक्ष बताते हुए कहा जा रहा है कि इसको पाकर व्यक्ति मदमस्त हो जाता है।

पश्चिमी आर्थिक मॉडल ने हमें और नया मॉडल दिया है – सम्पूर्ण भोग का। विभिन्न भोगों की पूर्ति के लिये कमाये हुए धन से मनुष्य का जीवन किस प्रकार दुखमय हो जाता है, इसका विवरण महाभारत में बताया गया है –

अर्थानामार्जने दुःखमर्जितानां तू रक्षणे
नाशे दुःख व्यये दुख धिगर्थ दुःख माजनम।

यानि धन के उपार्जन में, उपार्जित धन की रक्षा में, धन के व्यय एवं नाश में दुःख होता है। दुःख के माजन बने हुए धन को धिक्कार है।

इस प्रकार से कमाये हुए धन के हम मालिक नहीं बनते, बल्कि गुलाम बन जाते हैं। इसीलिये कहा गया है – धन को पॉकेट में रखो, सिर पर मत चढ़ाओ। आज धन सिर पर चढ़ कर बोल रहा है। धन की भाषा पूरा विश्व समझ भी रहा है। हमारे युवा उपकरणों के दुरुपयोग से नष्ट हो रहे हैं। क्षणिक उन्माद के लिये मदिरापान, जुआ, चोरी, चेनस्मोकिंग, ड्रग, पार्न आदि में लिप्त हो रहे हैं।

इस प्रकार से हम समझ सकते हैं कि इस परिस्थिति के लिये हम धन को दोषी नहीं ठहरा सकते। इसके लिये जिम्मेदार हमारी विकृत मानसिकता है। धन एक अच्छा सेवक है। समस्या पैदा तब होती है जब हम उसके गुलाम हो जाते हैं। मनुष्य धन उपार्जन को ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य बना लेता है एवं उस कमाए हुए धन से स्वयं के जीवन को भोगों में खपा देता है। यह विकृत मानसिकता नहीं है तो और क्या है? हमारा शरीर अवश्य घरों में रहता है, परन्तु वास्तविक में वह अपने मन-मस्तिष्क में रहता है। व्यक्ति अपनी पूरी सोच को जिस तरफ केन्द्रित करता है, उसी दुनियाँ में वह विचरण करने लगता है। फलस्वरूप जीवन के आनंद को नहीं भोगकर वह सांसारिक भोगों में अपने को खपा देता है। रुपये पैसे के अलावा अनेक मूल्यवान उपादानों को हमारी संस्कृति में धन की संज्ञा दी गई है। यथा –

गो धन, गज धन, वाज धन, और रतन धन खान
जब आये संतोष धन, सब धन धूरि समान।

यह प्रकृति का ध्रुव सत्य है कि जिस चीज का मनुष्य को अहंकार हो जाता है, वही मनुष्य के पतन का कारण बन जाता है। इतिहास में अनेको उदाहरण हमें मिलते हैं जहाँ राजा-महाराजा भी एक निर्लिप्त भाव से एक सेवक के रूप में शासनकार्य संचालित करते रहे हैं। भगवान राम से अधिक उपयुक्त उदाहरण की आवश्यकता नहीं है। वर्तमान युग में बिल गेट्स, वारेन बफेट जैसे धनाढ्यों का उदाहरण हम ले सकते हैं, जिन्होंने कमाये हुए अपने धन का ९० प्रतिशत तक लोक-उपकार में खर्च करने का संकल्प लिया है। दो हाथ से कमाओ एवं चार हाथों से दान करो।

इस समस्या से निजात पाने का एकमात्र रास्ता है कि हम अपने सोच में परिवर्तन लायें। समाज में धन उपार्जन का निषेध नहीं है, किन्तु उस कमाये धन का स्वयं को मालिक समझना वर्जित है। हमारी संस्कृति, संस्कार एवं ज्ञान यही सिखाते हैं। कहा भी गया है –

सत मत छोड़ो हे नरा, सत छोड़या पत जाय
सात की वांधी लक्ष्मी, फेर मिलेगी आय।

मानव जीवन का लक्ष्य है अमृतत्व प्राप्त करना। वृहदारण्य उपनिषद में कहा गया है – **अमृतत्वस्यतु नाशास्ति वित्तेन** – धन से अमृतत्व (अमरता) प्राप्त होने की आशा ही नहीं है।

तो फिर धन के पीछे दौड़ते-दौड़ते यह जीवन, लक्ष्य हासिल होने के पहले ही शेष न हो जाय, इस बात का ख्याल सभी को रखना चाहिए।

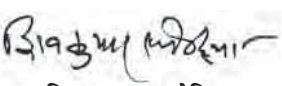

शिव कुमार लोहिया

ऋतुराज बसंत का स्वागत

– गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया

स्नेही-सुधी समाजबंधु,

विद्यादायिनी माँ सरस्वती का पुनीत पावन माह आ गया है। शिशिर शिथिलता के साथ अवसान की ओर है और वसन्त जीवन में उल्लास का संचार करने हेतु दरवाजे पर दस्तक दे रहा है। पूर्वांचल में वसन्त का आरंभ वसन्त पंचमी से हो जाता है। इसे श्रीपंचमी व वागेश्वरी पंचमी भी कहा जाता है। उत्तरांचल में यह होलिकोत्सव पर वसन्तोत्सव मनाकर किया जाता है। पूर्वांचल में माघ के उत्तरार्द्ध से चैत के पूर्वार्द्ध तक का समय वसन्त का है।

वसन्त पंचमी का आयोजन एवं माँ शारदे का पूजन अर्चन जिस पैमाने पर पूर्वांचल में होता है, अन्यत्र नहीं होता। सब कुछ प्रफुल्लित एवं खिला-खिला नजर आने लगता है। **इस ऋतु में मन में नयी उमंग, नयी चाहत, नया उत्साह – सब कुछ नया-नया आभासित होता है। ऋतुराज वसन्त नवीनता लेकर आता है। तरुवृन्द नये नये पल्लवों से झूमने लगते हैं। कलियाँ खिलने को आतुर हैं। विहंग भी नभ में स्वच्छंद विचरण करने लगे हैं। वसुंधरा ने सरसों का पीताम्बर ओढ़ लिया है। सुमन सौरभ से वातावरण सुरभित हो चला है।** महाकवि निराला के शब्दों में –

सखि वसंत आया!
भरा हर्ष वन के मन
नवोत्कर्ष छाया
सखि वसंत आया!
किसलय वसना नव-वय-लविका
मिली मधुर प्रिय-उर तरु-पतिका
मधुप-वृंद बंदी
पिक-स्वर नभ सरसाया
सखि वसंत आया!

हमें लोग लक्ष्मीपुत्र कहते हैं। हमारे यहाँ लक्ष्मी का महत्व पहले भी बहुत था और आज भी है, इसमें कोई दोष भी नहीं है। परन्तु आज के तकनीकी युग में सरस्वती की कृपा का महत्व भी बहुत मायने रखता है। हमारे समाज के दूरदर्शी मनीषियों ने आज से ८५ वर्ष पूर्व विद्या के महत्व को अंगीकार किया तथा अपने कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत समाज में शिक्षा के प्रचार-प्रसार का ध्येय भी रखा। माँ वीणावादिनी के आशीर्वाद से आज अपना समाज शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षित समाजों के समकक्ष खड़ा है। अपने पूर्वजों के पुण्य प्रताप का ही फल है कि आज हम शिक्षा के हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहे हैं। चार्टर्ड अकाउंटेंसी में तो जैसे हमारा आधिपत्य है। डॉक्टरी के हर विभाग में समाज की पहचान है। संघ लोक सेवा आयोग द्वारा संचालित आई.ए.एस., आई.पी.एस., आई.एफ.एस., आई.आर.एस. जैसी प्रशासनिक सेवाओं में भी हम द्रुत गति से आगे बढ़ रहे हैं। इंजीनियरिंग की कोई भी विद्या हमसे अछूती नहीं है। न्यायपालिका और वकालत में भी हमारी उपस्थिति दर्ज है। सेना में भी मारवाड़ी समाज, जाट रेजिमेंट और राजपुताना रेजिमेंट के रूप में अपने शौर्य का परचम लहलहा रहे हैं। संगीत एवं कला के क्षेत्र में भी हमारे हस्ताक्षर हैं। भित्ति चित्रों के लिए विख्यात राजस्थान, कई अमूल्य धरोहर समेटे हुए है।

हमें अपने मारवाड़ी होने पर गर्व है परन्तु गुमान में अहंकार नहीं रहना चाहिए। स्वाभिमान के साथ सौम्यता तथा विनम्रता आवश्यक है। आत्ममुग्धता के बिना हर क्षेत्र में निरन्तर आगे बढ़ने का प्रयास करते रहना चाहिए। हमारी सोच यही होनी चाहिए कि **बीते हुए कल से हमारा आज बेहतर हो और आने वाला कल आज से बेहतरीन हो।** विज्ञान के क्षेत्र में हर हाल में बढ़त बनाने का हमारा प्रयास होना चाहिए। प्रशासनिक सेवा एवं राजनीति में भी अपनी उपस्थिति बढ़ाने में हमारा प्रयास निरन्तर चलते रहना चाहिए। साथ ही साथ विरासत में मिली सेवा एवं सहायता की भावना सतत बनी रहे, ऐसे संस्कार हमें अपने बच्चों में डालते रहना चाहिए। **संस्कार की नाव पर समय की धार पर**, हमारी पहचान है जिसे हमें बरकरार रखना है।

कम संसाधन वर्ग का ध्यान समाज के साधन सम्पन्न लोग ही रख सकते हैं। साथ ही साथ अपने भाई, बन्धु तथा परिजनों का ध्यान रखना भी अपेक्षित है। हम जहाँ भी रहें वहाँ के स्थानीय निवासियों के साथ धुल-मिलकर एकरस होकर रहना है, अपनी पहचान कायम रखते हुए।

अपने साथ काम करने वाले सभी सहयोगियों की सुख-सुविधा का ध्यान रखना भी हमारा दायित्व है। वैश्विक महामारी कोरोना से भी सबक लेने की आवश्यकता है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन अपने विभिन्न कार्यक्रमों एवं संगोष्ठियों के माध्यम से निरन्तर समाज को जागरूक करने का प्रयास कर रहा है।

आप सभी बन्धुओं को श्रीपंचमी की हार्दिक शुभकामनाएँ! माँ शारदा की कृपा हम सब पर बनी रहे, इन्हीं आशाओं के साथ...

जय समाज-जय राष्ट्र!

बीकानेरियां मांय जीवती है आपरी भासा अर संस्कृति

– संजय हरलालका
राष्ट्रीय महामंत्री

मारवाड़ी सम्मेलन यानि राजस्थान, हरियाणा, मालवा एवं उनके निकटवर्ती भू-भागों के रहन-सहन, भाषा एवं संस्कृति वाले उन व्यक्तियों की संस्था, जो स्वयं अथवा उनके पूर्वज देश या विदेश के किसी भू-भाग में बसे हों। यानि प्रवासी मारवाड़ियों की संस्था। समाज विकास के दिसम्बर २०२० के अंक में मैंने राजस्थानी भाषा में '**कोरोना' न बणावो 'करुणा'** शीर्षक से एक सामयिक लेख आप सब सुधी एवं गणमान्य सदस्यों के समक्ष रखा था। इसी कड़ी में इस बार स्वयं अग्रवाल होते हुए भी बीकानेरियों की बात उनकी ही भासा का पुट देते हुए रखने का प्रयास कर रहा हूँ।

मकसद सिर्फ अधिकाधिक मारवाड़ियों को सम्मेलन से जोड़ना है। मेरा मानना है कि सबसे ज्यादा भाषा और संस्कृति ही है, जो हमें आपस में जोड़ने का काम करती है। इसीलिये तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से लेकर अन्य राजनेता तक जिस प्रदेश में जाते हैं, वहाँ के लोगों को प्रभावित करने के लिए उनकी भाषा में कुछ बात अवश्य रखते है, वहाँ का पहनावा पहन उनकी संस्कृति में रंगे हुए दिखते हैं। मेरे इस प्रथम प्रयास में त्रुटियाँ रहनी स्वाभाविक है, जिसको आप नजरअंदाज करेंगे, इसका पूर्ण विश्वास है।

आगले म्हीने मांय होली आय री है, कलकत्तो हो अर बीकानेर, या जठे-जठे बीकानेरी रैहवे है, गणगौर रा गीत– **गौर ए गणगौर माता खोल ए किवाड़ी, बाहर ऊबी थारी पूजण वाली/ ईशरदास जी बीरो चूनड़ी रंगाई, बाई रोवां के दाय नहीं आई रे/नीलगर ओज्यूँ रंग दे म्हारी चुनड़ी, अल्ला रंग दे पल्ला रंग दे,** जयांलरा दिनगै पैलां कानां मांय गूंजेगा। अे गीत राजस्थानी काईनी गावै, इंयारे बात भी काईनी, पर साची बात तो याईज है क बीकानेरी/माहेश्वरी माथे ही ज्यादा गाया ज्यावै है। अंयाही जद बीकानेरियां मांय टाबरां रा ब्याव होवे, जणा '**केसरियो लाडो...**' जयांलका लुगाई अर मोट्यारां क गायेड़ा गीतां स्यूं सगलो माहौल गमकणे लाग ज्यावै है।

मारवाड़ी सम्मेलन रो हरदम ओ ही परयास रैवे ह क आपां आपांरी संस्कृति न बचावां। इयेरै खातर घणी चेष्टा भी करी जावै ह। टेम-टेम माथे गोष्ठियां होवे ह। आंपारे परब-त्यौहार अर नेगचार री सारी जानकारियां रै साथै अेक सुन्दर सी पोथी भी बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन हाला छपाई ह, जिकै न एस.आर. रूँगटा ग्रुप क सैयोग स भी लोगां न भेज्यी गई है।

उरै म्हे बात बीकानेरी री ई वास्ते कर रियो हूँ क बियांमै आज भी आपरी संस्कृति री झलक दिखै है। ब्याहां म मोट्यारां रो पेंचो बांधणो, लुगायां रो बोरळो पैरणो, साड़ी पैरण रो खास तरीको सगळां रो ध्यान आपरी कानी खींच लेवे।

म्हे ओ खायो, ओ पेरियो, बढ़िया जी आया कायनी, छोरी तो भोत फूटड़ी है... जैयांलरा शबद जद कानां मांय पड़ै तो आपरै मायड़ प्रदेश री याद आवणी स्वाभाविक ह। म्हें भोत सा बीकानेरी परिवार क सम्पर्क माथै रहूँ हूँ, बियांकै घरां म आज भी आपोरी भासा ही बोली ज्यावै है।

जै बात हरियाणा क लुगाई-मिनखां री करां तो बठे भी आपरी भासा अर संस्कृति री झलक दिखे है। पर राजस्थानी मांय खासकर अग्रवालां मांय आपांरी संस्कृति रो दिन-दुनी अर रात चौगुणी ह्रास होय रैयो है, या भोत चिंता री बात है।

बदलते टेम'र सागे चालणे मांथै कई बुराई नेंई है, पर खुद न इ तरीके स बदल लेवणो, क आणे हाली टेम मांय आपांरा टाबर ही क्यूं नहीं जाणे, या आछी बात भी कांयनी। पारिवारिक रिस्ता न पैलां ही ग्रहण लाग चुक्यो है, घणकरा भाई-भाई आपरो ठोर अलग-अलग कर लिया, मां-बाप र सागै रेवणै म भी तकलीफ होण लागी। अबार भी जे आपां नैई संभल्या तो आणै हाली टेम मांय सरीर क सागै मानसिक रूप स भी बुढापो बैरी होय ज्यासी।

मारवाड़ी सम्मेलन रो हरदम ओ ही परयास रैवे ह क आपां आपांरी संस्कृति न बचावां। इयेरै खातर घणी चेष्टा भी करी जावै ह। टेम-टेम माथे गोष्ठियां होवे ह। आंपारे परब-त्यौहार अर नेगचार री सारी जानकारियां रै साथै अेक सुन्दर सी पोथी भी बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन हाला छपाई ह, जिकै न एस.आर. रूँगटा ग्रुप क सैयोग स भी लोगां न भेज्यी गई है।

अंयालको परयास सम्मेलन रो तो आगै भी चालतो ही रैवसी, पर सुधार तो आपां सगळां री चेष्टा स ही होयसी। आपां बातां तो घणेरी कर लेवां, पर साचे परयास माथे कमी रैय ज्यावै। म्हारो सम्मेलन रे सगळै प्रदेश अर शाखावां स या अरदास है क बे भी इरै वास्ते मोकळी चेष्टा करे। ईमानदारी स करियोड़ी चेष्टा रो फल तो फेर ही मिल पासी। यो फल मीठो भी घणेरो होयसी, बस एक बार चाखणे री जरूरत है।

संजय हरलालका

To your taste buds, with love...

Refreshingly, yours.

Indulgently, yours.

Addictively, yours.

Spicily, yours.

Healthily, yours.

Nourishingly, yours.

Delightfully, yours.

Obsessively, yours.

Temptingly, yours.

Passionately, yours.

Snackingly, yours.

Yours Tastefully Anmol™

celebrating 25 years

BISCUITS

www.anmolindustries.com | Follow us on:

राष्ट्र सर्वोपरि; समाज एवं राष्ट्रकल्याण हेतु निःस्वार्थ प्रयास हमारा नैतिक दायित्व : गोवर्धन गाड़ोदिया

सकारात्मक बदलाव समय की जरूरत : भानीराम सुरेका

"हमारा ये कर्तव्य है कि जाति-धर्म-सम्प्रदाय से ऊपर उठकर, एकजुटता के साथ राष्ट्रीय हित के लिए कार्य करें। देश के कोने-कोने में बसे मारवाड़ी, राष्ट्र निर्माण में अपनी महती भूमिका निभा रहे हैं। बदलते देश के साथ हमें भी अपने अंदर सकारात्मक बदलाव लाने चाहिए।" ये विचार हैं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री भानीराम सुरेका** के जो उन्होंने गत २६ जनवरी २०२१ को ७२वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर झंडोत्तोलन के पश्चात आयोजित बैठक को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये। बैठक का आयोजन सम्मेलन के डकबैक हाउस स्थित केन्द्रीय कार्यालय सभागार में किया गया।

इससे पहले **श्री सुरेका** ने सम्मेलन के केन्द्रीय–प्रांतीय पदाधिकारियों तथा सदस्यों के साथ शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता स्थित सम्मेलन मुख्यालय भवन के समक्ष राष्ट्रीय झंडोत्तोलन किया। तत्पश्चात् राष्ट्रीय गान हुआ और सम्मेलन सभागार में बैठक आयोजित की गई। बैठक का सभापतित्व करते हुए श्री सुरेका ने सबको गणतंत्र दिवस पर अपनी शुभकामनाएँ ज्ञापित की। उन्होंने कहा कि देश के कोने-कोने में आज इस राष्ट्रीय पर्व को पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है।

सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** ने राँची से अपने संदेश में सम्मेलन के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि संविधान के तहत मिले अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों के प्रति सजग रहना भी हमारा राष्ट्रीय एवं सामाजिक दायित्व है। सम्मेलन अपने ध्येयवाक्य – **'म्हारो लक्ष्य, राष्ट्र री प्रगति'** के प्रति समर्पित है। आज इसी संकल्प के साथ आगे बढ़ने का दिन है।

अपने वक्तव्य में सम्मेलन के निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री संतोष सराफ** ने कहा कि हमारा देश दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और हमारा संविधान दुनिया का सबसे बड़ा लिखित संविधान। देश के भिन्न-भिन्न प्रांतों में इतनी विभिन्नताओं के बावजूद भी हम एक हैं, ये हमारे संविधान की ताकत है। उन्होंने कहा कि अभी भी गरीबी, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि कई क्षेत्रों में बहुत

कुछ करने की आवश्यकता है। सम्मेलन एक वैचारिक संस्था है। अपनी कमियों एवं खामियों पर हम सतत चर्चा करते आये हैं और उनके निवारण हेतु प्रयास भी निरंतर करते रहे हैं। कोरोनाकाल में सम्मेलन द्वारा अपनी केन्द्रीय, प्रांतीय एवं स्थानीय शाखाओं के माध्यम से, विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा समाज के संसाधनहीन एवं वंचित वर्ग हेतु सेवाकार्य निरंतर जारी है।

पश्चिम बंग सम्मेलन के प्रादेशिक अध्यक्ष **श्री नंदकिशोर अग्रवाल** ने कहा कि अनेक बलिदानों के पश्चात, हमें ये आजादी प्राप्त हुई है। कोरोना जैसी वैश्विक महामारी के बावजूद, सम्मेलन जिस तरह से समाजहित एवं सेवाकार्यों में संलग्न रहा, वो प्रशंसनीय है। इसी प्रकार, हम मिल-जुलकर राष्ट्रहित में कार्य करते रहेंगे, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है।

वित्तीय उपसमिति के चेयरमैन **श्री आत्माराम सोंथलिया** ने कहा कि स्वतंत्रता की लड़ाई तथा आजाद भारत के समाजनिर्माण में एक बड़ा योगदान मारवाड़ी समाज का रहा है। नयी पीढ़ी को इन विषयों से अवगत कराना आवश्यक है। राजनैतिक चेतना उपसमिति के चेयरमैन **श्री नंदलाल सिंघानिया** ने कहा कि जम्मू-कश्मीर अब संवैधानिक रूप से भी अन्य राज्यों/केन्द्रशासित राज्यों की भाँति भारत का अभिन्न अंग बन चुका है। दूसरे राज्यों की तरह, समाज के लोग अब वहाँ भी उद्योग-व्यापार कर सकते हैं।

राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्रीगण **सर्वश्री गोपाल अग्रवाल** एवं **सुदेश अग्रवाल**, राष्ट्रीय संगठन मंत्री **श्री बसंत मित्तल**, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष **श्री दामोदर बिदावतका** के अलावा **सर्वश्री प्रमोद गोयनका, शंकर कारीवाल, के.के. सिंघानिया, सुरेश अग्रवाल, किशन किला, अजय गुप्ता, रामकिशन अग्रवाल** आदि ने भी अपने संक्षिप्त वक्तव्य रखे।

बैठक का संचालन सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री **श्री संजय हरलालका** ने किया। धन्यवाद-ज्ञापन करते हुए श्री हरलालका ने कहा कि संगठन में अपार शक्ति होती है। संगठित होकर हम समाज तथा राष्ट्रहित में, कई गुणा अधिक कार्य कर सकते हैं।

बैठक में **सर्वश्री ओमप्रकाश अग्रवाल, संजय शर्मा, विनय सराफ, अरुण माहेश्वरी, कमल सरावगी, रामविलास मिरानिया, महेश शाह, रमेश बूबना, नवीन जैन, शम्भू मोर, राजेन्द्र सुरेका, बिनोद टेकड़ीवाल, अमित मूँधड़ा, राधा किशन, संजीव केडिया, महेन्द्र अग्रवाल, सुदेश पोद्दार** आदि उपस्थित थे।

MARWARI SAMMELAN FOUNDATION

(A Trust of All India Marwari Federation)

उच्च शिक्षा कोष

समाज के बच्चों को शिक्षित कर परिवार को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में पहल

छात्र/छात्राएँ नि:शुल्क छात्रवृत्ति के लिये सम्पर्क करें

इंजीनियरिंग, टेक्निकल, चिकित्सा, मैनेजमेंट आदि क्षेत्रों में स्नातकोत्तर/उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति हेतु समाज के मेधावी एवं जरूरतमंद छात्र-छात्राओं से आवेदन आमंत्रित हैं।

पात्रता : (क) १७ और २५ वर्षों के बीच के उम्र के मेधावी छात्र-छात्राएँ जिनका शैक्षिक परीक्षाओं में प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा हो और जिन्हें केवल अपनी योग्यता के बल पर किसी मान्यताप्राप्त शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल रहा हो।

(ख) जिन आवेदकों के माता-पिता की वार्षिक आय तीन लाख रुपयों से कम होगी, उन्हें प्राथमिकता दी जाएगी।

प्रक्रिया : (क) पूर्व शैक्षिक प्रमाणपत्रों, प्रवेश के प्रमाण, माता-पिता के आय प्रमाणपत्र एवं पासपोर्ट साइज चित्रों के साथ, मारवाड़ी सम्मेलन की किसी शाखा/सम्बद्ध संस्था से अनुमोदित आवेदन प्रस्तुत करने हैं।

(ख) एक छात्र-छात्रा को वर्ष में अधिकतम दो लाख रुपयों की राशि अनुदानस्वरूप दी जा सकती है।

(ग) प्रतिवर्ष कुछ छात्रवृत्तियाँ छात्राओं के लिए सुरक्षित हैं।

आवेदन करें : *चेयरमैन, उच्च शिक्षा उपसमिति, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन*

४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-१७, फोन : (०३३) ४००४४०८९, ईमेल : aimf1935@gmail.com

प्रांतीय समाचार : पूर्वोत्तर

पूर्वोत्तर सम्मेलन के सत्र २०१८-२० हेतु प्रांतीय पुरस्कारों को घोषणा

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा सत्र २०१८-२० के प्रांतीय पुरस्कारों की घोषणा गत जनवरी में की गई। सत्र (२०१८-२०) के प्रांतीय अध्यक्ष **श्री मधुसूदन सीकरिया** तथा प्रांतीय महामंत्री **श्री राजकुमार तिवाड़ी** ने बताया कि इस सत्र की सर्वश्रेष्ठ शाखा का पुरस्कार हेतु **डिब्रुगढ़ शाखा** को तथा सर्वश्रेष्ठ प्रांतीय पदाधिकारी के रूप में प्रांतीय संगठन मंत्री **श्री कृष्ण कुमार जालान** को चयनित किया गया है। सत्र के सर्वश्रेष्ठ प्रांतीय संयोजक का पुरस्कार **श्री विवेक सांगानेरिया**, गुवाहाटी को तथा सर्वश्रेष्ठ प्रांतीय कार्यकारिणी सदस्य का पुरस्कार **श्री छतर सिंह गिड़िया**, लखीमपुर को प्रदान किया गया। सर्वश्रेष्ठ जनसंपर्क कार्यक्रम का पुरस्कार **नगांव शाखा** को प्रदान करने की घोषणा की गई।

श्री सीकरिया ने उक्त सत्र के दौरान सहयोग हेतु प्रांतीय महामंत्री श्री राजकुमार तिवाड़ी, प्रांतीय कोषाध्यक्ष श्री संजय कुमार मोर, प्रांतीय संगठन मंत्री श्री कृष्ण कुमार जालान सहित सभी प्रांतीय पदाधिकारियों, समिति संयोजकों एवं प्रांतीय कार्यकारिणी के सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया। साथ ही, प्रांत की सभी शाखाओं एवं मीडियाकर्मियों को सहयोग प्रदान करने के लिए उनका विशेष रूप से आभार व्यक्त किया गया।

प्रांतीय समाचार : उत्कल

उत्कल सम्मेलन की बेलपहाड़ शाखा गठित

शिव कुमार अग्रवाल अध्यक्ष एवं रमेश धबालिया होंगे महामंत्री

गत ३१ जनवरी २०२१ को झारसुगुड़ा की जोनल मीटिंग में प्रांतीय अध्यक्ष श्री गोविंद अग्रवाल की उपस्थिति में उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की बेलपहाड़ शाखा का गठन किया गया।

इस अवसर पर शाखा में करीब २५ सदस्यों ने सदस्यता ग्रहण करते हुए सर्वसम्मति से **श्री शिव कुमार अग्रवाल** को अध्यक्ष, **श्री रमेश धबालिया** को महामंत्री एवं **श्री राजकुमार भुवानिया** को कोषाध्यक्ष चुना। **श्री सुभाष रुंगटा** को सहसचिव की जिम्मेदारी दी गई। अध्यक्ष श्री शिव कुमार अग्रवाल ने कहा कि हम बहुत जल्द ही पूरी टीम के साथ कार्यकारिणी सदस्यों की घोषणा करेंगे एवं शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया जायेगा। बैठक में शाखा की आगे की रणनीतियों एवं रूपरेखा पर चर्चा की गयी।

राजस्थानी कविता

गोरखधंधो

छोरा ने मोबाइल खाग्यो,
किश्तां खागी तिनखा न।
लुगायां ने फैसन खागी,
चिंता खागी मिनखां न।।

मकाना ने फ्लेट खायग्या,
शहर खायग्या गाँवा न।
परिवारा ने राड़ खायगी,
फूट खायगी भायां न।।

शॉपिंगमाल दुकाना खाग्या,
डेयरी खागी धीणे न।
कोल्डड्रिंक के लारे भूल्या,
छाछ शिकंजी पीणे न।।

पिज्जा तो रोट्यां न खागी,
गैस खायगी चूल्हा न।
बाजारू मिठायाँ खागी,
गुड़ और गुलगुला न।।

पैसा रो दिखावो खाग्यो,
आदर और सत्कार न।
बुफे रो खाणो तो खाग्यो,
जीमण में मनुहार न।।

हिंदी ने अंग्रेजी खागी,
इंजेक्शन खाग्या घासा न।
आपां तो खुद ही खाग्या,
आपाणी मायड़ भाषा न।।

कुरीत्या रीत्यां ने खागी,
नफरत खागी प्यार न।
विदेशी कल्चर ले डूब्यो
आपाणे संस्कार न।।

आँख्या वाळा ही अन्धा तो,
दोष नही है अन्धे न।
'कवि' समझ नही पायो,
दुनिया रे गोरखधंधे न।।

बंगाल में हिन्दीभाषियों की राजनीतिक हैसियत

– सीताराम शर्मा

पश्चिम बंगाल में बसा हिन्दी-भाषी या गैर बंगाली समाज मुख्यतः राजस्थान-हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार और गुजरात से है। राज्य में उनकी राजनीतिक हैसियत में लगातार गिरावट आई है। एक समय था जब पश्चिम बंगाल विधानसभा के अध्यक्ष हिन्दीभाषी ईश्वर दास जालान रहे, साथ-साथ जन प्रतिनिधि नियम १९५० के अन्तर्गत गठित पश्चिम बंगाल विधान परिषद (अपर हाउस) की प्रथम बैठक (१८ जून, १९५८) जाने-माने हिन्दीभाषी राजनेता विजय सिंह नाहर की अध्यक्षता में हुई।

स्वतंत्रता के पूर्व भारत अधिनियम १९३५ के अन्तर्गत गठित प्रथम संयुक्त बंगाल विधानसभा में व्यापार एवं उद्योग के प्रतिनिधियों के रूप में विभिन्न चैम्बर ऑफ कॉमर्स को विधानसभा में मनोनीत करने का अधिकार था, उस समय की मारवाड़ी समाज की महत्वपूर्ण संस्था मारवाड़ी एसोसिएशन को भी यह अधिकार दिया गया था। इतना ही नहीं, ३० जून १९४७ को महात्मा गांधी ने स्वतंत्र भारत में पश्चिम बंगाल के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. प्रफुल्ल घोष को पत्र लिखकर सुझाव दिया था कि 'सरदार वल्लभ भाई पटेल ने मुझे संदेश भेजा है कि आपके मंत्रिमंडल में एक मारवाड़ी मंत्री, बद्रीदास गोयनका या खेतान होना चाहिये। मुझे लगता है यह करना उचित होगा, नहीं करना अनुचित होगा। मुख्यमंत्री डॉ. घोष ने तत्काल उस सुझाव को नहीं माना। पर १९५२ के डॉ. विधानचन्द्र राय के प्रथम मंत्रिमंडल में ईश्वर दास जालान को मंत्री नियुक्त किया गया।

वर्ष १९५२ में बंगाल विधानसभा के कुल १८७ सदस्यों में ११ हिन्दीभाषी थे, जबकि २०१६ के चुनाव में विधानसभा की सीटें १८७ से १०७ बढ़कर २९४ हो गयी है, वहीं हिन्दीभाषी सदस्यों की संख्या ११ से घटकर मात्र ७ रह गयी। ये थे अर्जुन सिंह, कन्हैयालाल अग्रवाल, वैशाली डालमिया, लक्ष्मीरतन शुक्ला, रोहित शर्मा, रछपाल सिंह एवं जीतेन्द्र तिवाड़ी। इनमें से कन्हैयालाल अग्रवाल (कां.) एवं रोहित शर्मा (जी.जे.एम) को छोड़कर बाकी सभी उम्मीदवार ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस के प्रार्थी थे। हालाँकि हाल ही में कुछ सदस्य दल बदलकर भाजपा में शामिल हुए हैं।

डॉ. विधानचन्द्र राय के प्रथम मंत्रिमंडल में मंत्री ईश्वर दास जालान के बाद से लगातार एक हिन्दीभाषी को बंगाल मंत्रिमंडल में स्थान मिला। परन्तु १९७७ से २०११ तक प्रायः ३५ वर्षों में बंगाल के वामपंथी मंत्रिमंडल में किसी भी हिन्दीभाषी को मंत्रिमंडल में स्थान नहीं मिला। इतने वर्षों बाद ममता बनर्जी ने ही २७ मई २०१६ को अपने मंत्रिमंडल में हिन्दीभाषी लक्ष्मीरतन शुक्ला को युवा एवं खेल राज्य मंत्री नियुक्त किया। इससे पूर्व ममता बनर्जी ने २०११ में सिख समुदाय के रछपाल सिंह को पर्यटन मंत्री नियुक्त किया था।

पश्चिम बंगाल से लोकसभा में भी हिन्दी भाषियों का निर्वाचन इक्का-दुक्का ही रहा है। १९५२ से २०१९ तक के १८ संसदीय चुनावों में इने-गिने हिन्दीभाषी ही बंगाल से लोकसभा पहुँच पाये। इसी तरह करीब ७० वर्षों में कुल १२ हिन्दीभाषी राज्यसभा के लिये निर्वाचित हुए। जहाँ राज्य की हिन्दीभाषी जनसंख्या लगातार बढ़ी है, वहीं उनके राजनीतिक प्रतिनिधित्व में कमी आई है।

सभी राजनीतिक दल चुनाव के समय हिन्दी भाषियों को फुसलाते हैं, लेकिन सिर्फ वोट बैंक के लिये। लेकिन इसके लिये क्या केवल राजनीतिक दलों को दोष देना उचित होगा। इसके लिये क्या हिन्दीभाषियों की सक्रिय राजनीति के प्रति उदासीनता जिम्मेदार नहीं है? हिन्दीभाषियों के राजनीतिक प्रतिनिधित्व का प्रश्न जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही आवश्यक है हिन्दीभाषियों में राजनीतिक चेतना, सक्रिय राजनीतिक भागीदारी एवं सर्वोपरि अधिकतम मतदान ही राजनीतिक प्रतिनिधित्व प्रदान कर सकता है।

हिन्दीभाषी आरक्षण की माँग नहीं करता, लेकिन राजनीतिक प्रतिनिधित्व की कामना करता है एवं राजनीतिक दलों की इस ओर पहल की अपेक्षा करता है। कोलकाता में बड़ाबाजार को हिन्दीभाषियों, विशेषकर मारवाड़ियों एवं उत्तर प्रदेश-बिहार के लोगों का गढ़ माना जाता है। बड़ाबाजार का प्रतिनिधित्व बराबर हिन्दीभाषियों ने किया है, आज उस नाम का निर्वाचन क्षेत्र ही नहीं है। बंगाल के कतिपय निर्वाचन क्षेत्र जहाँ हिन्दीभाषी बड़ी संख्या से बसते हैं और निर्णायक भूमिका निभाते हैं और जिन क्षेत्रों से लगातार वर्षों तक हिन्दी भाषा-भाषी निर्वाचित होते आये हैं उनमें से इक्के-दुक्के क्षेत्रों को छोड़कर गत वर्षों में प्रायः इन सभी विधानसभा क्षेत्रों में हिन्दीभाषी निर्वाचित नहीं हो रहे – उदाहरणस्वरूप कलकत्ता पोर्ट, जोड़ासांको, रासबिहारी, मानिकतल्ला, खड़गपुर, काशीपुर, रानीगंज, मटियाब्रुज, बजबज, जोड़ाबागान, खरदा और भवानीपुर। इन सीटों में भवानीपुर को अपवाद माना जा

सकता है क्योंकि किसी भी विधानसभा क्षेत्र से मुख्यमंत्री का चुनाव लड़ना और विजयी होना वहाँ के मतदाताओं के लिये गौरव एवं सम्मान की बात होती है।

कहा जाता है कि राजनीति में बहुत गंदगी है। लेकिन अच्छे और विशिष्ट व्यक्ति राजनीति से परहेज करेंगे तो यह गंदगी और बढ़ेगी। राजनीति सिर्फ देश के प्रशासन या कानून व्यवस्था तक ही सीमित नहीं है, आर्थिक-सामाजिक नीतियों का निर्धारण उसका अहम हिस्सा है। हिन्दी-भाषी, विशेषकर मारवाड़ी अभी तक राजनीतिक दलों के कोषाध्यक्ष रहे हैं, जरूरत है उनके अध्यक्ष बनने की। धन के बल की बजाय, जमीन से जुड़ना होगा। अपनी राजनीतिक सोच एवं विचार के अनुसार देश की राजनीति में सक्रिय भागीदारी निभायें।

गत मतदानों में हिन्दी-भाषी बाहुल्य विधानसभा क्षेत्रों में मतदान का प्रतिशत निराशाजनक रहा है। गत चुनाव में बंगाल के अधिकतर विधानसभा क्षेत्रों में मतदान औसतन ७५ से ८० प्रतिशत के बीच था। करीबन १५ क्षेत्रों में तो ९० प्रतिशत से अधिक मतदान हुआ। हिन्दीभाषी विधानसभा क्षेत्रों में यह प्रतिशत ४५ से ६५ के बीच रहा। स्पष्टतः हिन्दीभाषी मतदाता मतदान के प्रति उदासीन रहे हैं। यह एक विचारणीय विषय है। हिन्दीभाषियों की इस स्थिति के लिये कौन से लोग जिम्मेदार हैं? राजनीतिक दल, राज्य के राजनीतिक नेता या हिन्दीभाषी स्वयं?

विधानसभा चुनाव २०२१ का बिगुल बज गया है। शीघ्र ही राजनीतिक दल उम्मीदवारों की सूची घोषित करेंगे। मुख्य दलों की उम्मीदवारों की सूची में हिन्दीभाषी प्रार्थियों की संख्या २९४ की कुल सीटों में क्या संख्या रहती है और कितने विजयी होते हैं, वह आने वाले वर्षों में बंगाल में हिन्दीभाषियों की राजनीतिक हैसियत तय करेगा।

('सन्मार्ग' से साभार)

श्रद्धांजलि

श्रवण तोदी : एक सच्चे दिल के इंसान – सीताराम शर्मा

अजातशत्रु, अच्छे दिल के इंसान और मित्रों का मित्र – यह सभी बातें किसी पर सही मायनों में लागू होती है, वे **श्रवण तोदी** अब हमारे बीच नहीं रहे। काफी दिनों से अस्वस्थ उनकी तबीयत शनिवार को अचानक बिगड़ी और रविवार ०७ फरवरी २०२१ की सुबह उनका स्वर्गवास हो गया। ७७ वर्षीय श्रवण तोदी अपने पीछे पत्नी चित्रा, दो पुत्र रवि और राहुल तथा अनगिनत प्रशंसकों एवं कृतज्ञ परिचित–अपरिचित लोगों को छोड़ गये।

१९६५ के भारत-पाक युद्ध के समय इनका परिवार बंगलादेश (तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान) से जो अंतिम कमर्शियल हवाई जहाज भारत आया था उसमें वे भागकर एक शरणार्थी के रूप में कलकत्ता आये थे। बड़े भाई नन्दलाल तोदी के साथ मिलकर गणेश नारायण वृजलाल प्रा.लि. के नाम से सफल हायर परचेज का काम किया।

मेरा पहला परिचय ५२ वर्ष पूर्व, ६८-६९ में पहले उनके बड़े भाई नन्दलाल तोदी से हुआ था, बाद में श्रवण जी से। उनका अनुज निरंजन मेरे साथ इण्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट में एम.बी.ए. में साथ पढ़ते थे। अपने प्रगतिशील विचारों के चलते श्रवण बंगाल के कम्युनिस्ट नेताओं के बहुत नजदीक आ गये। चूँकि अधिकतर बड़े कम्युनिस्ट नेता मुख्यतः पूर्वी बंगाल से थे इसलिए यह प्रगाढ़ता बढ़ती गई। संभवतः इसलिए, बंगलादेश युद्ध में पाकिस्तानी सेना के आत्मसमर्पण के दो दिन बाद १९ दिसम्बर १९७१ को पहली प्रेस पार्टी में वे मेरे साथ जैसोर और खुलना तक गये थे। कहते हैं कि १९७० के दशक में, जब बंगाल में कम्युनिस्ट नेता पुलिस से छिपकर रहते थे, उन्होंने उनको दमदम में अपनी सूते की मिल में शरण दी थी। इस दौरान वे ज्योति बसु, स्नेहांशु आचार्य और बुद्धदेव भट्टाचार्य के बहुत नजदीक आ गये थे, लेकिन यह मित्रता सैद्धांतिक विचारों की समानता पर आधारित थी, न कि किसी स्वार्थवश। श्रवण तोदी ने अनगिनत लोगों का भला किया, जिसमें उनका कोई व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं होता था। आज कलकत्ता में हिन्दुस्तान क्लब, जिसका मैं भी अध्यक्ष रहा हूँ, उसके दस तल्ले का भवन खड़ा है। उसके निर्माण में श्रवण तोदी की सर्वोपरि भूमिका रही – प्रत्येक सरकारी सहयोग में, लेकिन वे कभी हिन्दुस्तान क्लब के अध्यक्ष नहीं बने।

आमरी अस्पताल की घटना के बाद से उनको राजनैतिक कारणों से जिस विपरीत स्थितियों का सामना करना पड़ा, उसने उनके मनोबल को बहुत कमजोर कर दिया था। हालाँकि वे इसके लिए पूर्णतया जिम्मेदार नहीं थे। जिन्हें वे अपना समझते थे और जो लगातार एवं बड़े रूप में लाभान्वित हुए थे, उन्होंने उनका साथ छोड़कर अपने आप को अलग कर लिया था, इससे उनको बड़ी निराशा हुई। लेकिन वे एक ऐसे सच्चे दिल के इंसान थे कि कभी उनके मुँह से किसी की आलोचना नहीं सुनी, वे अन्दर-अन्दर ही घुटते रहे। उनके प्रशंसकों, उनसे लाभान्वित लोगों की अपार संख्या है, लेकिन इस अजातशत्रु का शायद ही कोई आलोचक या विरोधी मिलेगा। ऐसे इंसान बिरले होते हैं।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से दिवंगत पुण्यात्मा को विनम्र-कृतज्ञ श्रद्धांजलि!

सम्मेलन के कोरोना राहत सेवाकार्य के अन्तर्गत निःशुल्क भोजन वितरण

प्रदेशों द्वारा गणतंत्र दिवस का पालन

बिहार

छत्तीसगढ़

– डॉ. मनोहरलाल गोयल

अनुभव

श्रीमती प्रसाद अेक नुवी पत्रिका रै दफ्तर में पूगी अर सम्पादक सूं मिली। अपणी अेक पुराणी कहाणी उण नै देता हुयां कैयो-अेक साल पैली जद आप अपणी पत्रिका को प्रकासण सम्पादन सरू कर्‌यो हो, जणां भी म्है आप कन्नै आयी ही। इब तो आप आ कहाणी प्रकाशित कर ई द्‌यो।

सम्पादक जी कहाणी नै उलट-पलट'र देखी अर बोल्या – आ कहाणी तो वाई है। इण ने तो म्है बीं वक्त ई अस्वीकृत कर दीनी ही, अर आपनै पाछी कर दीनी ही।

श्रीमती प्रसाद पड्डत्तर दीन्यो - हां जी, म्हनै याद है। पण म्है सोच्यो क इण अेक बरस में आपरै अनुभव अर बुद्धि में जरूर बढोतरी होगी होसी।

कार बनाम सरकार

पुराणी कारां री अेक प्रदर्शनी उद्‌घाटन करबा नै मंत्री जी पूग्या। वै पुराणा कार चालक रैया है अर किसम-किसम री नूंवी-पुराणी कार चलावण रा शौकीन भी। प्रदर्शनी द्वार पर फीतो काट'र वै मांयनै गया अर सुन्दर सी अेक कार रै स्टेयरिंग माथै जा बैठ्या। फेर बोल्या – फीतो काटणौ तो औपचारिक उद्‌घाटन है, असली उद्‌घाटन तो इब करूंला – कार स्टार्ट कर'र।

वै कार चलावण रो परयास करै लाग्या। कार सूं कीं आवाज आयी अर कार थोड़ी आगै भी बढ़ी। लाग्यो क कार चालण नै तैयार है। पण कार दो पावंडा आगै बढ'र खड़ी होगी। मंत्रीजी कार चलावण रो परयास करता करता थाकग्या, पण कार टस सूं मस ई कोनी हुई। वा अंगद रा पांव जैया स्थिर होयगी। मंत्री जी फेर भी स्टीयरिंग माथै बैठ्या रैया। जणा प्रदर्शनी रो अेक अधिकारी कैयो कार नै छोड़ो मंत्रीजी, आ भोत अड़ियल कार है, चालणी कोनी, आप तो स्टेज माथै चालो अर उद्‌घाटन भाषण करो।

मंत्रीजी कैयो – कैंयां कोनी चालसी? म्है सरकार चलाऊं हूँ। आ कुण सी चीज है जकी सरकार सूं बेसी अड़ियल है।

इतराक में भीड़ मांय सूं आवाज आयी – आ कार है मंत्री जी, सरकार कोनी। सरकार तो भगवान भरोसै चालती रैवै है, पण कार अैयां कोनी चालै।

जणां मंत्री जी को पी.ए. कैयो – अै ठीक कै रिया है, सरकार। आओ, आप तो उद्‌घाटन भाषण करो। आपनै दूजै कार्यक्रम में भी चालणौ है आपकी सरकारी कार बारां नै खड़ी है।

मां रो तर्क

आज बंटी को पांचवौ जलम दिन है। भोरै सूं ई बो घणौ खुश है अर उत्साह सूं भर्‌यो है। वो अेक थैला मांय चाकलेट भर'र सागळै परिवार रै लोगां में बांट रियो हो। मायत पूछ्‌यो – बंटी, तेरी मिठाई बांटण रो काम खत्म हुयो क कोनी हुयो। तेरा मामाजी आवण वाळा है, तैयार हुय जा।

बंटी पड्डतर दीन्यो – काम बस खत्म ई समझौ, मॉम। सै नै दे चुक्यो हूं। बस दादा दादी नै दे'र तुरन्त आरियो हूं।

– उणा नै रेवण दें – मां को आदेश हुयौ।

– क्यूं मॉम, बंटी सवाल कर्‌यो – उणा नै क्यूं नी। वै तो मनै सै सूं बेसी प्यार करै है। मां सवाल कर्‌यो – तेरा लारला जलम दिन पर दादाजी तन्नै उपहार में के दीन्यू हो?

– कीं भी कोनी दीन्यू, बस प्यार।

स्पष्टवादी बंटी पड्डतर दीन्यू। बीं नै अपणै लारलो जलम दिन याद आयगो। बीं नै याद है, दादाजी ढेर सारो प्यार अर मोकळो आशीर्वाद दीन्यू हो। सामान या नगद कीं भी कोनी दीन्यू हो।

जणां मां को तर्क हो – अब तन्नै ई के जरूरत है उणां नै मिठाई देण री?

बेतुको प्रश्नं

कवि नरेश पैली बार विमान यात्रा कर रैया हा। उण री बगल री सीट माथै अेक खूबसूरत सी युवती बैठी ही। नरेश जी बीं सूं बात करणौ चावै हा पण उणां री समझ में कोनी आ रियो हो क बात री सरूआत कैयां करी जावै। अंत में भोत सोच– समझ'र विचार कर'र हिम्मत दिखाता हुया पूछ्‌यो – के आप भी ई विमान सूं ई यात्रा कर री हो?

एक भाषा की विकास यात्रा

– अतुल कनक

राजस्थानी हिन्दी की बोली है या भाषा, इस बात पर चर्चा करने से भी पहले यह आवश्यक प्रतीत होता है कि क्या राजस्थानी को एक स्वतंत्र भाषा के रूप में संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान दिया जाना राष्ट्रहित के संदर्भ में किसी भी तरह से खतरनाक होगा - जैसा कि लगातार दुष्प्रचार किया जा रहा है।

बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से राजस्थानी भारत की छह प्रमुख भाषाओं में एक है और क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थानी भाषा का प्रसार क्षेत्र हिन्दी भाषा के बाद देश में सबसे बड़ा माना जाता है। अक्सर राजस्थानी भाषा की मान्यता का सवाल उठता है तो राजस्थानी की बोलियों में परिवेशगत भिन्नता को मुद्दा बनाकर राजस्थानी की एकरूपता का सवाल खड़ा कर दिया जाता है। यह सवाल खड़ा करने वाले इस तथ्य को भी विसरा देते हैं कि संपन्न बोलियाँ किसी भी भाषा की दुर्बलता नहीं, अपितु उसकी ताकत हुआ करती हैं। राजस्थानी में एक कहावत है – "बारह कोसाँ बोली पलटै, बनफल पलटै पाकाँ/ बरस छत्तीसा जोबन पलटै/ लखन न पलटै लाखाँ।" (बारह कोस पर बोली बदल जाती है, जंगल में लगा फल पकने पर बदल जाता है, छत्तीस वर्ष की वय में व्यक्ति का यौवन पलट जाता है अर्थात् बदलने लगता है लेकिन किसी व्यक्ति का जो स्वभाव एक बार पढ़ गया हो, वह लाख कोशिशों के बावजूद परिवर्तित नहीं होता।) स्पष्ट है कि भौगोलिक दृष्टि से दूरियाँ बढ़ते ही व्यक्तियों के उच्चारण में विविध कारणों से परिवर्तित होता है और यह परिवर्तन ही बोलियों की व्युत्पत्ति के मूल में होता है। राजस्थान, जो क्षेत्रफल की दृष्टि से अब भारत का सबसे बड़ा प्रदेश भी है, यदि विविध बोलियों से समृद्ध है तो यह अस्वाभाविक नहीं है। क्या पंजाब में रहने वाले हिंदी भाषी और बिहार में रहने वाले हिंदी भाषी उसी तरह का उच्चारण करते हैं जैसा राजस्थान या उत्तरप्रदेश के निवासी करते हैं? दुनिया में संस्कृत के अलावा शायद ही ऐसी कोई भाषा हो, जिसके विविध रूप प्रचलन में नहीं हो। जिस अंग्रेजी की बात लखन शर्मा ने अपने लेख में कही है, उस अंग्रेजी के भी कई रूप दुनिया में प्रचलित हैं। अमेरिकी अंग्रेजी और ब्रिटिश अंग्रेजी की तो 'स्पेलिंग' तक कई जगहों पर अलग-अलग है। ऐसे में वो किस अंग्रेजी से खतरे की बात कर रहे हैं?

कुछ लोगों को एक और भ्रम है। उनका कहना है कि आजादी के पहले राजस्थान नाम की कोई भौगोलिक इकाई ही नहीं थी तो फिर राजस्थानी नाम की भाषा का अस्तित्व कहाँ से आ गया? देश के एक प्रतिष्ठित चैनल से जुड़े एक जिम्मेदार अधिकारी ने पिछले दिनों मुझसे व्हाट्सअप पर यह सवाल किया। यह भ्रम है कि किसी भू-भाग के संदर्भ में राजस्थान शब्द का प्रयोग आजादी के बाद ही सबसे पहली बार हुआ। विद्वानों के अनुसार राजस्थान शब्द का प्रयोग विक्रम की छठी शताब्दी में चित्तौड़ के एक शिलालेख में सबसे पहले हुआ। फिर सन् ५३२ के मंदसौर (मध्यप्रदेश) के एक शिलालेख में और सन् ६२५ के सिरोही जिले के बसंतगढ़ के एक शिलालेख में भी 'राजस्थानियां' शब्द मिलता है। भाषा विज्ञानियों का मानना है कि वहाँ 'राजस्थानियां' शब्द का प्रयोग 'प्रांतपाल' या 'विदेश सचिव' के लिये हुआ। मुहणौत नैणसी, वीरभाण, बांकीदास और सूर्यमल्ल मिश्रण ने भू-भाग या राजधानी के तौर पर 'राजथांन' या 'राजस्थान' शब्द का प्रयोग किया। एक प्रदेश के तौर पर वर्तमान राजस्थान के लिये राजस्थान शब्द का प्रयोग सबसे पहले ब्रिटिश इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने किया। जेम्स टॉड ने उन्नीसवीं सदी के दूसरे दशक में राजस्थान का व्यापक भ्रमण किया और 'एनॉल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान' नामक पुस्तक लिखी। इसी भ्रमण के दौरान टॉड ने राजपूताने में ब्रिटिश साम्राज्य के साथ पहली संधि की भूमिका भी तत्कालीन कोटा राज्य के प्रधानमंत्री झाला जालिमसिंह के साथ मिलकर रची थी। उबेदुल्लाह फरैती (सन् १८८९), रामनाथ रतनू (सन् १८९२) और रामनारायण दुग्गड़ (सन् १९१३) ने भी बाद में अपनी-अपनी पुस्तकों के शीर्षक में एक भौगोलिक इकाई के तौर पर राजस्थान शब्द का प्रयोग किया।

लेकिन यह बात सबसे पहले जार्ज ग्रियर्सन ने कही कि इस प्रदेश के निवासियों की भाषा राजस्थानी है। जार्ज ग्रियर्सन ने यह बात अपनी पुस्तक 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ राजस्थान' में लिखी, जो १९०७-०८ में छपी। १९१४ ई. के आसपास इतालवी विद्वान एल. पी. तैस्सीतौरी ने 'इंडियन ऐंटीक्विटी' नामक एक पत्रिका में भारतीय भाषाओं पर लगातार लिखे। तैस्सीतौरी के ये लेख विशद् भाषाई सर्वेक्षण पर आधारित थे और तैस्सीतौरी ने भी राजस्थानी भाषा को एक स्वतंत्र भाषा का दर्जा दिया। बाद में डॉ. सुनीतिकुमार चाट ज्या, मोतीलाल मेनारिया, प्रो. नरोत्तमदास, डॉ. सरनामसिंह अरुण, हीरा लाल माहेश्वरी, सीताराम लालस, जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव एवं डॉ. देव कोठारी सहित कितने ही भाषाविदों ने राजस्थानी को एक स्वतंत्र भाषा के तौर पर स्वीकार किया। पं. मदनमोहन मालवीय ने जब राजस्थानी भाषा के गुणों के बारे में जाना था तो कहा था कि इस भाषा को युवाओं का अवश्य पढ़ाया जाना चाहिये। उन्होंने कहा था – "राजस्थानी वीरों की भाषा है, राजस्थानी का साहित्य वीर साहित्य है। संसार के साहित्य में उसका निराला स्थान है। वर्तमान काल में भारतीय नवयुवकों के लिये तो उसका अध्ययन अनिवार्य होना चाहियें।" रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी कहा था – "राजस्थान ने अपने रक्त से जो साहित्य निर्माण किया है, उसकी जोड़ का साहित्य और कहीं नहीं पाया जाता और इसका कारण है, राजस्थानी कवियों ने कठिन सत्य के बीच में रहकर युद्ध के नगाड़ों के मध्य कविताएँ बनाई थीं। प्रकृति का ताण्डव रूप उनके सामने था। आजकल क्या कोई केवल अपनी भावुकता के बल पर फिर उस काव्य का निर्माण कर सकता है? राजस्थानी भाषा के साहित्य में जो एक भाव है, जो एक उद्वेग है, वह केवल राजस्थान के लिए नहीं अपितु सारे भारतवर्ष के लिए गौरव की वस्तु है।"

लेकिन जिस राजस्थानी के बारे में इतनी सारी बातें की जा रही हैं, उसके बारे में कुछ बुनियादी बातों का जानना भी आवश्यक

है क्योंकि कई बार जानकारी का अभाव (मैं इसे अज्ञान नहीं कह रहा हूँ) व्यक्तियों को प्रवाद या प्रमाद की ओर धकेल देता है। राजस्थानी भारोपीय परिवार की भाषा है। हाड़ौती, मारवाड़ी, ढूँढाड़ी, मेवाड़ी, मेवाती, शेखावाटी और वागड़ी इसकी प्रमुख बोलियाँ हैं और इन बोलियों की भी कई उपबोलियाँ हैं। कुछ विद्वान मेरवाड़ी और गौड़वाड़ी को भी राजस्थानी की पृथक मुख्य बोलियों में गिनते हैं। प्रसार की दृष्टि से राजस्थानी का प्रयोग आधुनिक पाकिस्तान के कुछ हिस्सों में और सीमावर्ती हरियाणा में भी पाया जाता है। पाकिस्तान के कुछ विद्यालयों में तो आज भी 'राजस्थानी कायदो' नाम से बाकायदा राजस्थानी व्याकरण पढ़ाया जाता है। राजस्थानी की व्युत्पत्ति प्राचीन अपभ्रंश से मानी गई है। राजस्थानी साहित्य अकादमी, बीकानेर के पूर्व अध्यक्ष डॉ. देव कोठारी ने एक स्थान पर लिखा है – "भाषा विज्ञान की दृष्टि से राजस्थानी भाषा भारोपीय परिवार की भाषा है। इस राजस्थानी भाषा का मूल वैदिक संस्कृत और प्राकृत है। विद्वानों ने इस वैदिक संस्कृत और प्राकृत का विकास काल ई.पू. २००० से ६०० ई.पू. तक माना है। इसी वैदिक संस्कृत को छांदस भाषा भी कहा जाता है। यह छांदस भाषा साहित्यिक भाषा थी, लेकिन इसका लौकिक रूप प्राकृत के रूप में प्रतिष्ठित है। ई.पू. ६०० के आसपास प्राकृत का यह लौकिक रूप जनभाषा बनकर विकसित होने लगा। महावीर अर गौतम बुद्ध ने इसी लौकिक प्राकृत को अपने उपदेशों का आधार बनाया। वैदिक या छांदस भाषा जब व्याकरण के नियमों से बाँधी गई तो यह वैदिक या छांदस संस्कृत के तौर पर पहचानी जाने लगी। व्याकरण के कठोर नियमों के कारण यह संस्कृत बोलचाल से दूर होती गई और किताबों की भाषा तक ही सीमित होकर रह गई। इसके विपरीत लोकभाषा प्राकृत में व्याकरण की कठोरता नहीं थी, इस कारण यह लोकभाषा प्राकृत विकास की ओर बढ़ती गई। भाषा का यह सामान्य नियम है कि वह कठिनता से सरलता की ओर अग्रसर होती है। यह अग्रसर होना ही भाषा का विकास है।" (राजस्थानी पत्रिका जागती जोत के दिसंबर २००६ में प्रकाशित लेख के अंश का अनुवाद)

इसी लेख में कोठारी आगे लिखते हैं – "विकास की इस परंपरा में प्राकृत के भी कई स्थान-भेद हो गये। इन स्थान भेदों में शौरसैनी प्राकृत भी एक थी। भरत मुनि (३०० ईस्वी) ने अपने 'नाट्यशास्त्रम्' ग्रंथ के 'सप्तदश' अध्याय में जिन सात भाषाओं का उल्लेख किया है, उनमें शौरसैनी भाषा भी एक है। इस शौरसैनी प्राकृत से शौरसैनी अपभ्रंश का विकास हुआ। राजस्थानी और गुजराती की उत्पत्ति इस शौरसैनी अपभ्रंश से ही हुई। "प्रारंभिक राजस्थानी का यह रूप जैन संत उद्योतन सूरि की रचना 'कुवलयमाला' में देखने को मिलता है। यह रचना सन् ७७८ के लगभग राजस्थान के जालौर में लिखी गई। कुवलयमाला में जिन १८ देशी भाषाओं का उल्लेख है, उनमें 'मरू भाषा' भी एक है। यह मरूभाषा ही आधुनिक राजस्थानी की अपभ्रंशकालीन पूर्वपीठिका मानी जाती है। सत्रहवीं शताब्दी में एक अन्य जैन कवि कुशललाभ ने अपने ग्रंथ 'पिंगल शिरोमणि' में और मुगल शहंशाह अकबर के दरबार के इतिहासकार अबुल फजल ने 'आईने अकबरी' में इस क्षेत्र की भाषा के लिये मारवाड़ी शब्द का प्रयोग किया। दरअसल, मारवाड़ के प्रवासी व्यापारियों के देशभर में प्रभाव के कारण आज भी सामान्यतौर पर देश के दूसरे हिस्सों में राजस्थानियों के लिए 'मारवाड़ी' शब्द का एक सामान्य संज्ञा के तौर पर इस्तेमाल होता है और ठीक उसी तरह से राजस्थानी भाषा के लिये मारवाड़ी शब्द का प्रयोग किया जाता रहा। लेकिन इसका आशय यह नही है कि सिर्फ मारवाड़ी बोली ही राजस्थानी है। कुछ समय पहले राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता का विरोध करने वाले लोगों ने यह दुष्प्रचार भी किया कि राजस्थानी के नाम पर मारवाड़ी बोली को थोपने का प्रयास किया जा रहा है। लेकिन समकालीन राजस्थानी सृजन संसार की प्रवृत्तियों ने यह साबित कर दिया है कि यह मान्यता केवल दुराग्रह है।

कुवलयमाला में 'अप्पा-तुप्पा' नाम से जिस भाषा का नाम मिलता है ०१८८ अप्पा-तुप्पा भणि रे, अह पेच्छई मारू ए तत्तो) वक उस समय की आम आषा है और 'मरूभाषा' के नाम से राजस्थानी का उल्लेख हुआ है। कतिपय विद्वानों ने इसी मरूभाषा को जूनी राजस्थानी अर्थात् पुरानी राजस्थानी भी कहा है। कुवलयमाला के बाद की चार-पाँच शताब्दियों के राजस्थानी साहित्य का विशद विश्लेशण अभी शेष है। उस दौरान राजस्थानी का फुटकर प्रयोग कई रचनाओं में मिलता है लेकिन सन् १००० ईस्वी में मुनि रामसिंह द्वारा लिखे गये ग्रंथ 'पाहुड़ दोहा' में राजस्थानी का सबसे प्रारंभिक लिखित रूप मिलता है। सन् १०६८ ई. में ब्रजसेन सूरि ने 'भरतेश्वर बाहुबलि रास' नामक ग्रंथ लिखा। इसे राजस्थानी भाषा का पहला संपूर्ण ग्रंथ होने का गौरव प्राप्त है। यह महत्वपूर्ण है कि राजस्थानी के प्रारंभिक दौर की सभी प्राप्त रचनाएँ पद्य रचनाएँ हैं। शायद इसलिये कि उनमें से अधिकांश की रचना जनसाधारण को नीति शिक्षा देने के लिये हुई और पद्य रचनाओं को श्रुतिपरंपरा से आगे बढ़ा पाना अपेक्षाकृत सरल होता है। १४वीं शताब्दी से राजस्थानी साहित्य गद्य और पद्य दोनों में मिलता है। यहाँ उल्लेखनीय है कि समकालीन भारतीय साहित्य में छपे अपने लेख में लखन शर्मा ने यह आरोप भी लगाया है कि उन भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किये जाने का प्रयास किया जा रहा है, जिन भाषाओं में अभी तक गद्य का विकास तक नहीं हुआ। वो शायद इस तथ्य से अनजान हैं कि हिन्दी में भले ही कहानी लेखन की परंपरा गुलैरी जी के लेखन से पल्लवित हुई हो लेकिन राजस्थानी में वात् साहित्य की परंपरा चार सौ से अधिक साल पुरानी है। यह वात् साहित्य किसी कथा को कहने की सबसे लोकप्रिय परंपराओं का पोषक भी है। वात् के अलावा भी दवावैत, वचनिका, ख्यात् जैसी प्राचीन विधाऐं राजस्थानी में मौजूद हैं और अब तो गद्य की सभी विधाओं में राजस्थानी में लगातार लिखा जा रहा है। राजस्थानी भाषा का पहला आधुनिक उपन्यास 'कनक सुंदर' शिवचंद्र भरतिया ने १९०३ में हैदराबाद में लिख दिया था। इस ग्रंथ की भाषा उन लोगों को भी एक संदेश देती है जो बोलीगत विभिन्नता के कारण राजस्थानी की एकरूपता का सवाल खड़ा करते हैं – "विद्या बिना आदमी लंबी चैड़ी आंख्यावाळो भी आंधो! लंबा चैड़ा कानवाळो भी बहरो! आछा हाथ पगां वाळो भी लंगड़ो लूलो/ अर मोटो भेजो सिरवाळो भी मन्यो मुरदो रह्या करे छे। विद्या बिना हिरदो सूनो, घर सूनो और देस सूनो! विद्या बिना मनुष्य को जमीं पर भार हुवा करे छै, विद्या बिना आप दुखी, कुळ दुखी, गांव दुखी अर देस दुखी! विद्या बिना आदमी सींग पूंछ बिना को पशु जाणणो! घास चरे नहीं, ओ पशु को मोटो भाग छे, नहीं तो पशु बापड़ा भूखा मर जाता।" यहाँ महत्वपूर्ण है कि भरतिया जी ने इस उपन्यास की रचना राजस्थान से बहुत दूर रहकर हैदराबाद में की थी और उनका उद्देश्य सरल भाषा में प्रवासियों को कुछ नीतिपरक बातें समझाना था, इसीलिये उन्होंने अपनी भाषा में ठेठ के ठाठ का इस्तेमाल नहीं किया लेकिन क्रियापदों के उपयोग एकरूपता के सवालों का सहज प्रत्युत्तर दे देते हैं।

(शेष अगले अंक में)

SERVICES AT A GLANCE

- **Laboratory Services - Advanced Automatic Equipments**

- **Radiology**

- MRI / CT / Scan	- Digital X-Ray
- Ultrasonography	- Colour Doppler Study

- **Cardiology**

- ECG	- Echo-Cardiography
- Echo-Colour Doppler	- Holter Monitoring

- Treadmill Test (TMT)

- **Wide Range of Pathology**
- **Pulmonary Function Test**
- **UGI Endoscopy / Colonoscopy**
- **Physiotherapy**
- **EEC / EMG / NCV**
- **General & Cosmetic Dentistry**
- **Elder Care Service**
- **Sleep Study (PSG)**
- **EYE / ENT Care Clinic**
- **Gynae and Obstetric Care Clinic**
- **Haematolgy Clinic**
- **Personalised Care (Injection, Dressing, ECG etc.) at your doorstep**
- **Health Check-up Packages**
- **Online Reporting**
- **Report Delivery**

Home Blood Collection

(033) 4021-2525, 97481-22475

98301 96659

Consultation I Diagnostics I Dentistry I Health Checks

Best wishes from

MERIDIAN®
GROUP

FOUNDATIONS FOR LIFE

Meridian Plaza, 209 C.R.Avenue,
4th Floor, kolkata- 700006
Ph: 033-40083125
Website: www.meridiangrouprealty.in

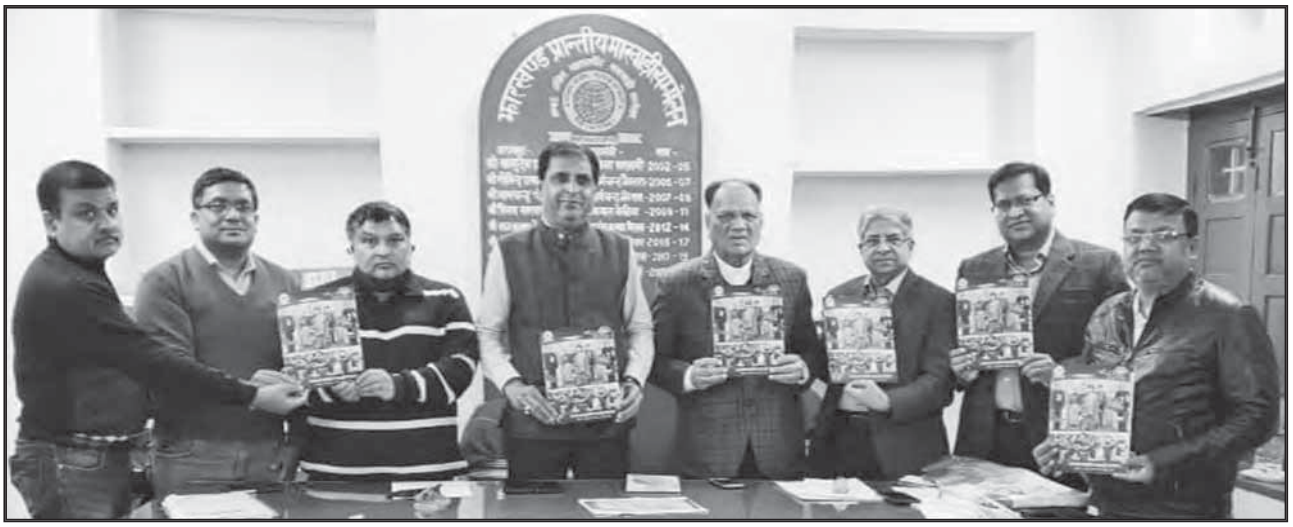

गत ०६ फरवरी २०२१ को झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन की त्रैमाशिक पत्रिका 'नई दिशा' के तीसरे अंक का विमोजन करते प्रांतीय अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, महामंत्री श्री पवन शर्मा, उपाध्यक्ष श्री कमल केडिया, उपाध्यक्ष व संपादक श्री विनोद जैन, संयुक्त महामंत्री व सह-संपादक श्री मनोज बजाज, संयुक्त महामंत्री श्री विष्णु सेन एवं श्री कौशल राजगढ़िया तथा कोषाध्यक्ष श्री संजय जैन।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित 'रंग भरी उड़ान : मेरा भारत महान' प्रतियोगिता के अन्तर्गत गोयल धर्मशाला परिसर, बक्सर में गत ०२ फरवरी २०२१ को जिला सम्मेलन द्वारा चित्रकला व रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन।

उत्तराखंड सम्मेलन द्वारा गणतंत्र दिवस का पालन

श्री जैन सेवा संघ के पदारूढ पदाधिकारी अध्यक्ष अशोक बरमेचा, महामंत्री अमीत मुणोत, उपाध्यक्ष शिवराज सोनी व अशोक कटारिया, कोषाध्यक्ष अशोक संचेती तथा सहमंत्री महावीर मुणोत एवं जसराज बाफणा के साथ अगले वर्ष के लिये मनोनीत पदाधिकारियों का तेलंगाना प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से गत ०७ फरवरी २०२१ को रामकोट स्थित श्री जैन सेवा संघ भवन में सम्मान करते हुये प्रादेशिक अध्यक्ष श्री रमेश कुमार बंग। साथ में परिलक्षित हैं महामंत्री श्री रामपाल अट्टल, प्रचार मंत्री श्री रामप्रकाश भन्डारी, श्री अनिरुद्ध कांकाणी, श्री राज बंग।

आज घर घर की कहानी है

– **रतन लाल बंका**
राँची, झारखंड

हम बड़ी उम्मीद लगाते हैं
बच्चों को खूब पढ़ाते हैं
खुद मुफलिसी में रहकर भी
उनकी हर चाह पुराते हैं
बच्चे हमारी निशानी हैं
आज घर घर की.....

प्यार दिया और दुलार दिया
अपना सब कुछ वार दिया
युवा हुआ और प्यार किया
अपनी मर्जी से विवाह किया
ये सब उनकी मनमानी है
आज घर घर की.....

फिर भी मन को मनाते हैं
अभी भी आस लगाते हैं
हँस हँस कर घर चलाते हैं
इस धक्के को सह जाते हैं
आखिर जिन्दगी निभानी है
आज घर घर.....

समझाया कुछ धन्धा कर लो
कारखाना लगे तो लगा लो
या अपने धन्धे में लग कर
उसे ही और बढ़ा लो
पढाई इसमें भी काम आनी है
आज घर घर.....

मुझे तो नौकरी करनी है
बनियागिरि नहीं करनी है
नफे नुकसान का झमेला है
मैं क्यों झेलूं ये झमेला है
इसमें स्टैण्डर्ड नहीं आनी है
आज घर घर.....

न अफसरों का रोब सहना है
न डर डर कर उनसे रहना है
हमें तो खुद रबाब करना है
और सुख चैन से रहना है
मौज में जिन्दगी बितानी है
आज घर घर.....

अब अकेले अकेले सब रहेंगे
अपने दुख दर्द किससे कहेंगे
यहाँ मालिक बनकर रहोगे
वहाँ चाकर बनकर रहोगे
चकरी में खुशी ना आनी है
आज घर.....

नहीं माना जिद पर अड़ा रहा
मैं सोच में गुमसुम पड़ा रहा
एक दिन बहू के साथ उड़ चला
हम देखते रहे घर उजड़ चला
किसे सुनाएँ ये कहानी है
आज घर घर की कहानी है

जब कभी हम फोन करते हैं
वे दफ्तर में ही मिलते हैं
तत्काल ही फोन रखते हैं
छुट्टियों में बस बाजार करते हैं
टेन्सन भरी ये जिन्दगानी है
आज घर घर की कहानी है।

सेहत के लिए अच्छा है आर्गेनिक फूड

सेहत के प्रति जागरूक लोग अब आर्गेनिक फूड की ओर अपना झुकाव बढ़ा रहे हैं। **आर्गेनिक फूड वह फूड है जो केमिकल फ्री होता है। इन्हें पैदा करने के लिए किसी तरह की रासायनिक खाद और कीटनाशक दवाओं का प्रयोग नहीं होता। इसे आम भाषा में जैविक खेती कहा जाता है।**

इनमें फल या सब्जी का आकार बढ़ाने के लिए या समय से पहले पकाने के लिए किसी भी तरह के कैमिकल प्रयोग में नहीं लाए जाते जबकि इनकी शक्ल और रंग के आधार पर इनकी पहचान करना मुश्किल होता है। बस इनके खाद्य पदार्थ स्वाद में थोड़ा अलग होते हैं, सब्जियाँ पकाने में समय कम लगता है और मसालों की गंध तेज होती है।

आर्गेनिक फूड की विशेषताएँ

● आर्गेनिक फूड्स जहरीले तत्वों से सुरक्षित होते हैं क्योंकि इनमें कैमिकल्स और विषैली दवाओं का प्रयोग नहीं किया जाता। इसके कारण हमारा स्वास्थ्य ठीक रहता है और बीमारियों का खतरा कम रहता है।

● आर्गेनिक खेती से उपजाए फल और सब्जियों में एंटी ऑक्सिडेंट्स होने के कारण इनमें पोषक तत्व बरकरार रहते हैं जो हमारी सेहत के लिए अच्छे होते हैं।

● आर्गेनिक खेती की मिट्टी अधिक उपजाऊ होती है क्योंकि इनकी खेती तब की जाती है जब इनके खेतों को दो साल तक खाली छोड़ा जाता है ताकि पेस्टिसाइड्स का प्रभाव खत्म हो सके।

● पारंपरिक सब्जियों और फलों से आर्गेनिक सब्जी और फल १० से ५० प्रतिशत तक अधिक पौष्टिक होते हैं। इनमें मौजूद पौष्टिक तत्व हमें कई खतरनाक बीमारियों से बचाते हैं।

● आर्गेनिक फूड के नियमित सेवन से वजन नियंत्रण में रहता है क्योंकि इनको प्रोसेस करने में सैचुरेटेड फैट्स का प्रयोग नहीं किया जाता।

कौन से आर्गेनिक फूड ज्यादा उपलब्ध हैं

● मौसमी फल सब्जियों की माँग अधिक होती है जैसे तरबूज, खरबूजा, टिंडा, तोरी, लौकी, आम आदि। इनके अतिरिक्त शहद, दालें, मसाले, चावल, आटा, ग्रीन टी, हर्ब्स, नारियल तेल और आलिव ऑयल आदि।

ध्यान दें जिन चीजों पर नैचुरल या फार्म फ्रेश लिखा हो, जरूरी नहीं कि वे आर्गेनिक ही हों। डीडीटी जैसे पेस्टिसाइड्स कई वर्षों तक हवा और मिट्टी में रहते हैं जो हमारे नर्वस सिस्टम खराब होने और कैंसर की वजह बनते हैं। आर्गेनिक फूड्स पारंपरिक फूड्स से ४० से ५० प्रतिशत तक अधिक महँगे होते हैं।

● प्याज, भुट्टा, नारियल, शकरकंद, मटर, अनन्नास जैसे फूड आइट्म्स को आर्गेनिक खरीदने की आवश्यकता हीं है क्योंकि इनके छिलके मोटे होते हैं। इन पर ऐस्टिसाइड्स का प्रभाव कम होता है। इनको नॉर्मल भी खा सकते हैं।

● पारंपरिक फूड आइटम्स को सावधानी बरतते हुए खाया जा सकता है।

● मौसमी फल और सब्जियाँ ताजी खरीदें। काटने से पूर्व अच्छे से मल मल कर धोएँ और आधा घंटा पूर्व साबुत फल और सब्जी पानी में डाल दें।

● दालें बहते पानी में धोएं। अगर भिगो कर रख रहे हैं तो पानी फेंक दें। नए पानी में सब्जी और दाल पकाएं।

● १ चम्मच नमक मिले पानी में फल और सब्जियों को आधा घंटा भिगो कर रखें।

● पोटेशियम परमैगनेंट १ लीटर पानी में १ मिली डालकर घोल बनाएं पत्तेदार सब्जियों को १५ मिनट तक उसमें भिगो कर रखें। पुनः धोकर बनाएं।

आर्गेनिक फूड्स को अपनी डाइट का अंग बनाए

आर्गेनिक फूड्स को हम एक ही बार में अपनी डाइट का अंग नहीं बना सकते क्योंकि इनका स्वाद भिन्न होता है। धीरे-धीरे इसे बढ़ा कर अपने जीवन का अहम हिस्सा बनाएँ।

● पॉलिश किये हुए चावल के स्थान पर रेड, ब्राउन या बिना पालिश वाला चावल सप्ताह में एक बार से प्रारंभ कर धीरे-धीरे बढ़ाएँ।

● पालक, मेथी, चौलाई, पुदीना, धनिया आदि से शुरूआत करें।

● सफेद चीनी के स्थान पर गुड़, शक्कर या खांड का प्रयोग करें।

● आर्गेनिक साबुन, लोशन और टूथपेस्ट का प्रयोग करें।

('सन्मार्ग' से साभार)

देव-स्तुति

[गतांक से आगे]

– डॉ. जुगल किशोर सर्राफ

स्निग्धप्रावृड्घनश्यामं सर्वसौन्दर्यसङ्ग्रहम्।
चार्वायतचतुर्बाहु सुजातरूचिराननम्।।
पद्मकोशपलाशाक्षं सुन्दरश्रु सुनासिकम्।
सुद्विजं सुकपोलास्यं समकर्णविभूषणम्।।

भगवान् की सुन्दरता वर्षाकाल के घने श्याम बादलों के समान है। उनके शारीरिक अंग वृष्टि जल के समान चमकीले हैं। दरअसल, वे समस्त सौन्दर्य के समष्टि हैं। उनकी चार भुजाएँ, सुन्दर मुख हैं और उनके नेत्र कमल पुष्प के पंखुड़ियों के समान हैं। उनकी नाक उन्नत, उनकी सुन्दर हँसी मोहने वाली, उनके दाँत और कान सुन्दर तथा उनका मस्तक सुन्दर और वे आभूषणों से सज्जित हैं।

पदा शरत्पद्मपलाशरोचिषा
नखद्युभिर्नोऽन्तरघं विधुन्वता।
प्रदर्शय स्वीयमपास्तसाध्वसं
पदं गुरो मार्गगुरुस्तमोजुषाम्।।

हे भगवान्, आपके दोनों चरणकमल इतने सुन्दर हैं मानो शरत् ऋतु में उगने वाले कमल पुष्प के खिलते हुए दो दल हों। दरअसल, आपके चरणकमलों के नाखूनों से इतना तेज निकलता है कि वह बद्धजीव के हृदय के सारे अन्धकार को तुरन्त दूर कर देता है। हे स्वामी, मुझे आप अपना स्वरूप दिखलाएँ जो किसी भी भक्त के हृदय के अन्धकार को दूर कर देता है। मेरे भगवान्, आप सबों के परम गुरु हैं, इसलिए आप जैसे गुरु के द्वारा अज्ञान के अन्धकार से आवृत सारे बद्धजीव प्रकाश प्राप्त कर सकते हैं।

अथानघाङ्घेस्तव कीर्तितीर्थयो–
रन्तर्बहिः स्नानविधूतपाप्मनाम्।
भूतेष्वनुक्रोशसुसत्त्वशीलिनां
स्यात्सङ्गमोऽनुग्रह एष नस्तव।।

हे भगवान्, आपके चरणकमल समस्त कल्याण के कारण हैं और समस्त पापों को नष्ट करने वाले हैं। इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे अपने भक्तों की संगति का आशीर्वाद दें, क्योंकि आपके चरणकमलों की पूजा करने से वे पूर्णतया शुद्ध हो चुके हैं और बद्धजीवों पर अत्यन्त कृपालु हैं। मेरी समझ में तो आपका असली आशीर्वाद यही होगा कि आप मुझे ऐसे भक्तों की संगति की अनुमति दें।

यत्रेदं व्यज्यते विश्वं विश्वस्मिन्नवभाति यत्।
तत्त्वं ब्रह्म परं ज्योतिराकाशमिव विस्तृतम्।।

हे भगवान्, निर्गुण ब्रह्म सूर्य के दिव्य प्रकाश अथवा आकाश सदृश सर्वत्र फैला हुआ है जो सारे ब्रह्मांड भर में फैला हुआ है तथा जिसमें सारा ब्रह्मांड दिखाई देता है, वह निर्गुण ब्रह्म आप ही हैं।

यो माययेदं पुरुरूपायसृजद्
बिभर्ति भूयः क्षपयत्यविक्रियः।
यद्भेदबुद्धिः सदिवात्मदुःस्थया
त्वमात्मतन्त्रं भगवन्प्रतीमहि।।

हे भगवान्, आपकी शक्तियाँ अनेक हैं और वे विभिन्न रूपों में प्रकट होती हैं। आपने ऐसी ही शक्तियों द्वारा इस दृश्य जगत की उत्पत्ति की है और यदि ऐसा है तो आप इसका पालन इस तरह करते हैं मानो यह चिरस्थायी हो, किन्तु अन्त में आप इसका संहार कर देते हैं। ऐसे परिवर्तनों द्वारा जीवात्माएँ विचलित रहती हैं, परन्तु आप कभी-भी इनसे विचलित नहीं होते, अतः वे इस दृश्य जगत को आपसे पृथक् मानती हैं। हे भगवान्, आप सर्वदा स्वतन्त्र हैं और मैं तो इसे प्रत्यक्ष देख रहा हूँ।

क्रियाकलापैरिदमेव योगिनः
श्रद्धान्विताः साधु यजन्ति सिद्धये।
भूतेन्द्रियान्तः करणोपलक्षितं
वेदे च तन्त्रे च त एव कोविदाः।।

हे भगवान्, आपका विराट रूप, इन्द्रियों, मन, बुद्धि, अहंकार तथा आपके अंश रूप सर्व नियामक परमात्मा इन सभी पाँच तत्त्वों से बना है। भक्तों के अतिरिक्त अन्य योगी यथा कर्मयोगी तथा ज्ञानयोगी अपने-अपने पदों में अपने-अपने कार्यों द्वारा आपकी पूजा करते हैं। वेदों में तथा शास्त्रों में जो वेदों के निष्कर्ष हैं, कहा गया है कि केवल आप ही पूज्य हैं। सभी वेदों का यही अभिमत है।

त्वमेक आद्यः पुरुषः सुप्तशक्ति–
स्तया रजःसत्त्वतमो विभिद्यते।
महानहं खं मरुदग्निवार्धराः
सुरर्षयो भूतगणा इदं यतः।।

हे भगवान्, आप समस्त कारणों के परम कारण एकमात्र परमपुरुष हैं। इस भौतिक जगत की सृष्टि के पहले आपकी भौतिक शक्ति सुप्त रहती है, किन्तु जब आपकी शक्ति गतिशील होती है, तो आपके तीनों गुण यथा सत्त्व, रज तथा तमो गुण क्रिया करते हैं। परिणामस्वरूप समष्टि भौतिक शक्ति अर्थात् अहंकार, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी तथा विभिन्न देवता एवं ऋषिगण प्रकट होते हैं। इस प्रकार भौतिक जगत की उत्पत्ति होती है।

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

आजीवन सदस्य

श्री अभिषेक बाजोरिया आनंद चिकित्सालय, भागलपुर, बिहार	**श्री पीयुष जाजोदिया** सुजागंज बाजार, भागलपुर, बिहार	**श्री रवि कुमार टिबड़ेवाल** मुंदिचक, भागलपुर, बिहार	**श्री अनिल कुमार खेमका** खरमनचक, भागलपुर, बिहार	**श्री मनीष जैन** सुजागंज, भागलपुर, बिहार
श्री मनोज कुमार खाबरिया हांडिया पट्टी, भागलपुर, बिहार	**श्री चिंटु कुमार अग्रवाल** सुजागंज, भागलपुर, बिहार	**श्री अमित कुमार झुनझुनवाला** मंद्रोजा चौक, भागलपुर, बिहार	**श्री विवेक अग्रवाल** स्टेशन रोड, भागलपुर, बिहार	**श्री अनिल काडेल** सोनापट्टी, भागलपुर, बिहार
श्री रवि प्रकाश खेतान चुनिहारी टोला, भागलपुर, बिहार	**श्री संजय किशोरपुरिया** डी.एन. सिंह रोड, भागलपुर, बिहार	**श्री मुकेश कुमार जैन** मारवाड़ी टोला लेन, भागलपुर, बिहार	**श्री महेश कुमार सिंघानिया** चुनिहारी टोला, भागलपुर, बिहार	**श्री सुनील कुमार खेमका** डी.एन. सिंह रोड, भागलपुर, बिहार
श्री अमर कुमार अग्रवाल डी.एन.सिंह रोड, भागलपुर, बिहार	**श्री राजकुमार सिंघानिया** डी.एन. सिंह रोड, भागलपुर, बिहार	**श्री निर्मल कुमार सिंघानिया** डी.एन. सिंह रोड, भागलपुर, बिहार	**श्री आशीष कुमार सराफ** सुजागंज, भागलपुर, बिहार	**श्री कन्हैया लाल अग्रवाल** मारवाड़ी टोला, भागलपुर, बिहार
श्री सज्जन कुमार राय छोटीहाटी, भागलपुर, बिहार	**श्री उमानाथ जोशी** सुजागंज, भागलपुर, बिहार	**श्री भरत कुमार खेतान** जयराम मारवाड़ी लेन, भागलपुर, बिहार	**श्री ऋषभ बाजोरिया** डी.एन. सिंह रोड, भागलपुर, बिहार	**श्री राहुल खेमका** खरमंचक, भागलपुर, बिहार
श्री विकास कुमार सोंथलिया एक्जीविशन रोड, पटना, बिहार	**श्री अमर नाथ शर्मा** बंगाल बाजार, सहरसा, बिहार	**श्री गौरव कुमार दहलन** गांधी पथ, सहरसा, बिहार	**श्री विष्णु कुमार** दहलन रोड, सहरसा, बिहार	**श्री प्रिंस दहलन** दहलन चौक, सहरसा, बिहार
श्री गौतम दहलन दहलन गली सब्जी बाजार, मधेपुरा, बिहार	**श्री अमित कुमार सराफ** जीवन सदन रोड, मधेपुरा, बिहार	**श्री कौशल कुमार सराफ** जीवन सदन रोड, मधेपुरा, बिहार	**श्री विकास सराफ** विधापुरी मोहल्ला, मधेपुरा, बिहार	**श्री अशोक कुमार सराफ** चंदा टॉकीज रोड, मधेपुरा, बिहार
श्री विकी कुमार सुल्तानिया करपुरी चौक, मधेपुरा, बिहार	**श्री ललित कुमार सुल्तानिया** मेन रोड, मधेपुरा, बिहार	**श्री विजय कुमार जैन** मेन रोड, मधेपुरा, बिहार	**श्री सुनील कुमार अग्रवाल** बिहारीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री सज्जन कुमार अग्रवाल** मेन रोड, मधेपुरा, बिहार
श्री राजेश कुमार शाह बिहारीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री मनोज कुमार अग्रवाल** बिहारीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री श्याम सुंदर सोमानी** बिहारीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री कमल कुमार पटवारी** बिहारीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री भानवर्धन** बिहारीगंज, मधेपुरा, बिहार
श्री हरि प्रसाद बिहारीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री शंभु कुमार सराफ** बिहारीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री राजेंद्र प्रसाद अग्रवाल** बिहारीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री राम कुमार डागा** बिहारीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री सज्जन कुमार अग्रवाल** बिहारीगंज, मधेपुरा, बिहार
श्री अरुण कुमार भालोटिया पीपलताल, पटना, बिहार	**श्री ओम प्रकाश लोहिया** बख्तियारपुर, पटना, बिहार	**श्री पुरुषोत्तम लाल लोहिया** बख्तियारपुर, पटना, बिहार	**श्री संतोष कुमार लोहिया** बख्तियारपुर, पटना, बिहार	**श्री पंकज कमलिया** वरशालीगंज, नवादा, बिहार
श्री ओम प्रकाश मूँधड़ा बिहारीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री गोपाल सराफ** मुरलीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री विनोद बाफना** मुरलीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री राम गोपाल अग्रवाल** मुरलीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री बजरंग कुमार** मुरलीगंज, मधेपुरा, बिहार
श्री अशोक प्रसाद अग्रवाल मुरलीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री श्याम लाल सोनी** मुरलीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री इंद्रचंद जैन बोधरा** मुरलीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री सूरज कुमार** मुरलीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री बलराम अग्रवाल** मुरलीगंज, मधेपुरा, बिहार
श्री श्याम कुमार शर्मा मुरलीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री सुमित कुमार** मुरलीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री घनश्याम अग्रवाल** मुरलीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री बबलू कुमार शर्मा** मुरलीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री अंकित कुमार** मुरलीगंज, मधेपुरा, बिहार
श्री राजू कुमार अग्रवाल मुरलीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री प्रदीप अग्रवाल** मुरलीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री पारस सराफ** मुरलीगंज, मधेपुरा, बिहार	**श्री दिलीप अग्रवाल** पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार	**श्री नीरव कुमार** पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार
श्री गौरव कुमार पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार	**श्री पवन कुमार केडिया** पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार	**श्री सुभाष कुमार अग्रवाल** पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार	**श्री नारायण कुमार चौधरी** पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार	**श्री ओम प्रकाश अग्रवाल** पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार
श्री ललित कुमार पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार	**श्री गौरव कुमार** पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार	**श्री आयुष कुमार केडिया** पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार	**श्री रितेश कुमार केडिया** पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार	**श्री पंकज कुमार सुल्तानिया** पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार
श्री कैलाश कुमार सुल्तानिया पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार	**श्री राज कुमार अग्रवाल** पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार	**श्री संजय कुमार खेमका** पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार	**श्री शुभम कुमार** पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार	**श्री सुबोध कुमार** पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार
श्री प्रमोद शाह पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार	**श्री मनीष कुमार पलरीवाल** पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार	**श्री आदित्य रंजन** पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार	**श्री सुशील कुमार सुल्तानिया** पुरेनी बाजार, मधेपुरा, बिहार	**श्री ममता अग्रवाल** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

आजीवन सदस्य

श्री सज्जन कुमार केजरीवाल त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्रीमती रेखा देवी** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्री प्रमोद कुमार केजरीवाल** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्रीमती दीप्ति देवी** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्री सुधीर कुमार अग्रवाल** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार
श्रीमती चंदा देवी मेन रोड, सुपौल, बिहार	**श्रीमती सुनीता देवी** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्री पवन कुमार अग्रवाल** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्री दीपक कुमार केजरीवाल** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्रीमती चेतना केजरीवाल** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार
श्री पंकज कुमार त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्री संदीप कुमार केजरीवाल** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्री सोनम केजरीवाल** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्री सुरेश कुमार अग्रवाल** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्रीमती सुनीता देवी** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार
श्री महावीर सराफ त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्रीमती मीना देवी** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्री अविनाश कुमार अग्रवाल** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्री स्वेता अग्रवाल** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्री महेश कुमार सराफ** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार
श्री संजय कुमार अग्रवाल त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्री सरोज अग्रवाल** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्री पवन कुमार अग्रवाल** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्रीमती नीलम केजरीवाल** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्रीमती मीरा अग्रवाल** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार
श्री मनोज अग्रवाल त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्रीमती मधु देवी** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्रीमती नीलम भरतिया** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्री सुशील कुमार केजरीवाल** त्रिवेनीगंज, सुपौल, बिहार	**श्रीमती आभा लड्ढा** रिहाबारी, गुवाहाटी, असम
श्री अजय अग्रवाल एन.टी. रोड, लखिमपुर, असम	**श्री आकाश पटवारी** एन.टी. रोड, लखिमपुर, असम	**श्रीमती अल्का जैन** अठगाँव, गुवाहाटी, असम	**श्री अमरव बोथरा** मचखोवा, गुवाहाटी, असम	**श्री आनंद प्रकाश केडिया** ए.टी. रोड, शिवसागर, असम
श्री अनिल कुमार जैन पॉल पट्टी रोड, धेमाजी, असम	**श्रीमती अनिता अग्रवाल** पॉल पट्टी रोड, धेमाजी, असम	**श्रीमती अनिता अग्रवाल** ठाकुरबाड़ी रोड, लखिमपुर, असम	**श्री अनिता बावरी** मनिपुर बस्ती, गुवाहाटी, असम	**श्री अनिता रिंगानिया** टी.आर.पी. रोड, गुवाहाटी, असम
श्री अनिता संचेती मेन रोड, धेमाजी, असम	**श्री जनजनी कुमार जोशी** जी.एन.जी. पथ, शिवसागर, असम	**श्री जनजनी मालपानी** जी.एन.जी पथ, शिवसागर, असम	**श्री अन्नापूर्णा लोहिया** रेहाबारी, गुवाहाटी, असम	**श्री अनु तोसनिवाल** एन.टी. रोड, लखिमपुर, असम
श्रीमती अनुभा मालपानी खेलमाती, लखिमपुर, असम	**श्री अरुण झंवर** टी.बी. रोड, लखिमपुर, असम	**श्रीमती अरुणा गोयल** भांगागढ़, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती आशा सरावगी** फैन्सी बाजार, गुवाहाटी, असम	**श्री अशोक हेमानी** लिकाबली रोड, धेमाजी, असम
श्री अशोक जैन (गोढा) मेन रोड, धेमाजी, असम	**श्री अशोक जैन (एस.एम.एस)** मेन रोड, धेमाजी, असम	**श्री अशोक खण्डेलवाल** बाबुपट्टी, शिवसागर, असम	**श्री अशोक कुमार बकलिवाल** ए.टी. रोड, शिवसागर, असम	**श्री अशोक कुमार मालपानी** जी.एन.जी पथ, शिवसागर, असम
श्री आत्माराम अग्रवाल ए.टी. रोड, शिवसागर, असम	**श्रीमती बबीता लुनावत** नारायण नगर, गुवाहाटी, असम	**श्री बजरंग बजाज** खेलमती, लखिमपुर, असम	**श्री बजरंग लाल तयाल** एम.जी. रोड, सोनितपुर, असम	**श्री बजरंगलाल अग्रवाल (चितावत)** जी.एन.जी पथ, शिवसागर, असम
श्री बरखा लोहिया शांतिपुर, गुवाहाटी, असम	**श्री बसंत कुमार सरावगी** ए.टी. रोड, शिवसागर, असम	**श्री बेनी प्रसाद गोयल** लक्ष्मीनगर, शिवसागर, असम	**श्री भागीरथमल शर्मा** बाजार पट्टी, लखिमपुर, असम	**श्री भगवती अग्रवाल** क्रिश्चन बस्ती, गुवाहाटी, असम
श्री भजना राम भार्गव मदन कॉलनि, सोनितपुर, असम	**श्री भारती शर्मा** मेन रोड, धेमाजी, असम	**श्री भंवर लाल बोहरा** सोनितपुर, असम	**श्री विजय कसेरा** रेड क्रॉस रोड, शिवसागर, असम	**श्री विजय कुमार चवचारिया** बाबुपट्टी, शिवसागर, असम
श्री विजय कुमार मालपानी जी.एन.जी. पथ, शिवसागर, असम	**श्री विजय कुमार चितावत** बी.जी. रोड, शिवसागर, असम	**श्री विजय कुमार शर्मा** जे.पी.अग्रवाल पथ, शिवसागर, असम	**श्री विकी अग्रवाल** जे.एन. रोड, सोनितपुर, असम	**श्री विमल किशोर राठी** मेन रोड, धेमाजी, असम
श्रीमती बीणा अग्रवाल अनिल नगर, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती बीणा चौवचरिया** छतरीबारी रोड, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती बिंदु हरलालका** नियर आर्या हॉस्पिटल, गुवाहाटी, असम	**श्री विनीता देवी राठी** मेन रोड, धेमाजी, असम	**श्री विनोद कुमार तोसनिवाल** एन.टी. रोड, लखिमपुर, असम
श्री बीरेंद्र शर्मा सोनितपुर, बालिपारा, असम	**श्रीमती चम्पा देवी मूँधड़ा** धेमाजी, असम	**श्रीमती चंदा जाजो** एन.टी. रोड, लखिमपुर, असम	**श्रीमती चंदा सीकरिया** एम.एस. रोड, गुवाहाटी, असम	**श्री चन्द्रकांता घोरावत** फैन्सी बाजार, गुवाहाटी, असम
श्री चंदरतन चाण्डक लिकाबली रोड, धेमाजी, असम	**श्री चयन गाड़ोदिया** रेहाबरी, गुवाहाटी, असम	**श्री दीपक कुमार केडिया** ए.टी. रोड, शिवसागर, असम	**श्रीमती देवकी नंदन जालान** बकली पट्टी, सिल्चर, असम	**श्री देवकिशन (मन्नु) डागा** जी.एन.जी पथ, शिवसागर, असम
श्री धनराज पारिख पुराना लाईन, सोनितपुर, असम	**श्री दिलीप कुमार जैन** मेन रोड, धेमाजी, असम	**श्रीमती डिम्पल जैन** मेन रोड, धेमाजी, असम	**श्री दीनदयाल शर्मा** ढोलकुपा, सोनितपुर, असम	**श्री दिनेश कुमार धानुका** जी.एन.बी. रोड, सोनितपुर, असम

SHANTI
GROUP

Exporters
Yarn Manufacturers
Commission Agent

SHANTI COTSYARN PVT. LTD.
SHANTI TRADERS
RAHUL KNITS

188, Jamunalal Bajaj Street, Kolkata-700 007, India
Ph : (O) 2272 0285/0255/0238
Fax: 91-33-2268-2102
Mobile: 9830032266
Email: ptx.mahesh@gmail.com

Selling Agents of :

RELIANCE INDUSTRIES LIMITED

RAMKRISHNA FORGINGS LIMITED

RAMKRISHNA FORGINGS LIMITED (RKFL) is India's Second biggest and leading Integrated Forging cum Machining Company. RKFL have Closed Die Forging Hammers, Upsetters, Ring Rolling & Press Lines from 2000 to 12500 Tons. RKFL is a supplier of major OEM's, Tier 1, suppliers globally for Automotive, Mining, Earth Moving, Oil & Gas, Railways and General Engineering Industries.

The Company is accredited with IATF 16949, ISO 14001 (EMS), OSHAS 18001, AS9100D and Testing Laboratories are NABL accredited (ISO/IEC 17025:2005). Its Corporate Office is located is Kolkata & Facilities are in Jamshedpur.

RKFL's product is exported to North America, South America, Europe, Australia, UK, Turkey and Asian Countries.

Regd. & Corporate Office:

23, Circus Avenue, 9th Floor,
Kolkata – 700 017, West Bengal, India.
Office phone : +(91) 033 4082 0900 / 7122 0900
Email – info@ramkrishnaforgings.com
Web site – www.ramkrishnaforgings.com

Overseas Office at:

Detroit-USA, Toluca-Mexico, Istanbul-Turkey.

Plants at:

Plant I, III, IV, V, VI & VII at Jamshedpur, India
Plant: II at Liluah, Howrah, India

Rungta Mines Limited
Chaibasa
RUNGTA STEEL™
SOLID STEEL
• Superior Technology
• Greater Strength
• Extreme Flexibility
500D
TMT REBARS
STEEL DIVISION
RUNGTA CHAMBERS
S.M.H.M.V. COMPLEX, CHAIBASA -833201
WEST SINGHBHUM, JHARKHAND, INDIA
Contact :
+91-6582-255261/ 361
+91-7008-012240
tmtmkt@rungtamines.com
csp@rungtamines.com
Approved by IS 1786:2008
Lic.No.-CM/L 5800021706
Approved by IS 2830:2012
Lic.No.-CM/L 5800007712

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2021-2023
Date of Publication - 26th February 2021
RNI Regd. No. 2866/1968

From :
All India Marwari Federation
4B, Duckback House
41, Shakespeare Sarani, Kolkata-17
Phone : (033) 4004 4089
E-mail : aimf1935@gmail.com